जय श्रीकृष्ण

श्रीमद्भागवत संदेश

1

वसन्त अंक

संरक्षक : भागवत भास्कर श्रीकृष्णचन्द्रजी शास्त्री (ठाकुरजी)

श्रीभागवत कृपा निकुंज स्थित सत्संग भवन में श्रीमद्भागवत कथा प्रवचन करते हुए श्रीठाकुरजी

अक्टूबर 2008 में आयोजित हीरा पब्लिक स्कूल, समालखा में श्रीमद्भागवत कथा स्थल पर स्थित यज्ञशाला का दृश्य

संरक्षक :

- भागवत भास्कर
  श्रीकृष्णचन्द्रजी शास्त्री 'ठाकुरजी'

प्रकाशक :

- श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान
  रमणरेती, वृन्दावन–281121

सम्पादक :

- पं. श्रीकिशन लाल शास्त्री
  भागवत मर्मज्ञ

सह सम्पादक :

- पं. श्रीबिष्णु पाठक (सारस्वत), कोलकाता
  ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्रज्ञ

सम्पादक मण्डल

- श्रीदेवकीनन्दन जोशी, कटक
- श्रीमती मीना अग्रवाल, दिल्ली
- श्रीमती बृजबाला गौड़, वृन्दावन
- डॉ. भागवत कृष्ण नांगिया, वृन्दावन

पत्राचार:

- पं. श्रीहरीशंकर उपाध्याय
  श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान
  श्रीभागवत कृपा निकुंज
  रमणरेती; वृन्दावन–281121 (मथुरा), उ.प्र.
  दूरभाष : 0565–2540857, 9897042861

मुद्रण–संयोजन :

- श्रीहरिनाम प्रेस
  बाग़ बुन्देला, लोई बाजार
  वृन्दावन. फोन : 2442415

श्रीमद्भागवत सन्देश

1
वसन्त अंक

श्रीगोपी गीत

जयति तेऽधिकं जन्मना व्रज:
श्रयत इन्दिरा शश्वदत्र हि।
दयित दृश्यतां दिक्षु तावका:
त्वयि धृतावस्त्वां विचिन्वते।।

श्रीमद्भागवत–10/31/1

ब्रजधरा यहाँ धन्य हो रही,
भुवन में विजेतृत्व पा रही।
उदधि पुत्रिका सेविता सदा,
तव सुजन्म से प्राणनाथ हे।।
तव पदाब्ज की दासियाँ सभी,
असु समर्पिता ढूँढ़ती तुम्हें।
सब दिशान में औ लतान में,
प्रगटिये प्रभो ! प्राणवल्लभ।।

• हिन्दी पद्यानुवाद : श्रीरामानुज शास्त्री जी •

अनुक्रमणिका

पृष्ठ

3 : **सम्पादकीय :** पं. किशन लाल शास्त्री
4 : **श्रीठाकुरजी :** एक परिचय
5 : **भागवत धर्म :** श्रीठाकुरजी
8 : **गौ–ब्राह्मण–संत सेवी श्रीदेवकीनन्दन जोशीजी**
9 : **प्रेम तत्त्व :** पं. श्रीरामानुज शास्त्रीजी
11 : **विवाह में अवरोध होने पर सिद्धिप्रद अनुष्ठान**
12 : **नित्यकर्म के कुछ आवश्यक मन्त्र**
13 : **धन्या ब्रज वसुन्धरा :** श्रीसौरभ गौड़
15 : **भजन : तेरा किसने किया शृंगार साँवरे**
16 : **सादर सस्नेह भेंट :** पूज्य श्रीडोंगरेजी महाराज
17 : **वास्तुशास्त्र का उद्‌गम :** पं. बिष्णु पाठक
21 : **वास्तु – एक दृष्टि में**
22 : **विशिष्ट शिव पीठ**
23 : **श्रीगणपति स्थल**
24 : **पुराण एवं श्रीमद्‌भागवत :** डॉ. भागवतकृष्ण नांगिया
27 : **धर्मक्षेत्र :** संकलित
28 : **राशि रत्न – क्या पहनें?**
29 : **रुद्राक्ष महिमा :** श्रीमती बृजबाला गौड़
32 : **शंख :** पवित्रता एवं समृद्धि का प्रतीक
33 : **शिवजी का राधावतार :** साभार कल्याण
34 : **व्रत पर्व 26 फरवरी से 24 मई 2009 तक**
40 : **संस्थान के सेवा प्रकल्प**

भागवत भास्कर श्रीकृष्णचन्द्रजी शास्त्री 'ठाकुरजी' के आगामी कार्यक्रम

1. 26 फरवरी से 6 मार्च	:	गोवर्धन सेवा समर्पित 1008 कथाओं का सामूहिक विशाल आयोजन, श्रीधाम वृन्दावन
2. 16 मार्च से 23 मार्च	:	खेरागढ़, आगरा
3. 27 मार्च से 3 अप्रेल	:	फोगला आश्रम, वृन्दावन
4. 5 अप्रेल से 12 अप्रेल	:	यमुना नगर, हरियाणा
5. 15 अप्रेल से 22 अप्रेल	:	अहमद नगर, महाराष्ट्र
6. 25 अप्रेल से 1 मई	:	डायमंड हार्बर रोड, कोलकाता
7. 6 मई से 13 मई	:	दिल्ली
8. 18 मई से 25 मई	:	चंडीगढ़
9. 28 मई से 4 जून	:	पालमगाँव, दिल्ली

सम्पादकीय

सुधी पाठकवृन्द,

श्रीमद्भागवत सन्देश का प्रथम अंक आपके कर-कमलों में प्रस्तुत करते हुए हमें अपार प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। अनेक वर्षों से हमारा प्रयास था कि श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान की ओर से एक ऐसी पत्रिका का नियमित प्रकाशन हो जिसके द्वारा परमपूज्य श्रद्धेय श्रीठाकुर जी द्वारा प्रचारित श्रीमद्भागवत का दिव्य सन्देश जन-जन तक पहुँचे। उनकी वाणी से निःसृत अनमोल वचनों का जनसामान्य लाभ उठाये और सनातन संस्कृति-हिन्दू धर्म का संरक्षण-सवर्धन हो।

यह पत्रिका आपको ब्रज क्षेत्र से जोड़े रखेगी। ज्ञानवर्धक लेख और उपयोगी सामग्री आपके मनन-चिन्तन और स्वाध्याय में महत्त्वपूर्ण योगदान देगी। इसकी उपस्थिति मात्र से आपके घर में धार्मिक परिवेश का निर्माण होगा-ऐसा हमारा विश्वास है।

आइये धर्म प्रचार के इस पावन कार्य में आप भी हमारे साथ जुड़िये। विद्वान् लोगों से हम निवेदन करना चाहेंगे कि वे इसके उपयुक्त लेख हमें प्रेषित करें। प्रथम वर्ष यह पत्रिका त्रैमासिक प्रकाशित होगी तत्पश्चात् इसका प्रकाशन मासिक होगा।

भागवत भास्कर पं. श्रीकृष्ण चन्द्र शास्त्री (श्रीठाकुर जी) ने अपने संरक्षण में इस पुस्तक का सम्पादन करने का अधिकार दिया, उसके लिए मैं उनका हृदय से आभारी हूँ। पं. बिष्णु पाठक (ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्रज्ञ) ने सम्पादन में मेरा पूर्ण सहयोग दिया, जिसके लिए मेरे पूर्ण आशीष उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

पं. किशन लाल शास्त्री
भागवत मर्मज्ञ

अति सहज व्यक्तित्व

श्रद्धेय पं. श्रीकृष्णचन्द्र जी शास्त्री (ठाकुरजी)

वैदिक आध्यात्मिक व्यास परम्परा के प्राणाधार श्रद्धेय पं. श्रीकृष्णचन्द्रजी शास्त्री (ठाकुरजी) का जन्म वृन्दावन के निकट लक्ष्मणपुरा ग्राम (मथुरा, उ.प्र.) में 1 जुलाई 1960 में हुआ। पं. श्रीरामशरण उपाध्याय और श्रीमती चन्द्रवती देवी की इस मेधावी सन्तान ने अपने पितामह पं. भूपदेव उपाध्याय से बचपन में ही रामायण एवं कृष्ण–चरित्र का मनोयोग से श्रवण किया।

श्रीठाकुरजी को प्रारम्भिक शिक्षा के समय ही वीतराग श्रीस्वामी रामानुजाचार्यजी महाराज का सानिध्य मिला, जिनसे इन्हें गीता, बाल्मीकि रामायण, श्रीमद्भागवत एवं विशिष्टाद्वैत वेदान्त की भी शिक्षा मिली। श्रीजगन्नाथपुरी स्थित श्रीजीयर स्वामी पीठ के मठाधीश श्रीगरुड़ध्वजाचार्यजी से श्रीवैष्णव दीक्षा प्राप्त हुई तथा श्रीवैष्णव दीक्षा देने का अधिकार भी मिला।

व्याकरण में आचार्य और दर्शन शास्त्र में एम.ए. की उपाधि से विभूषित श्रीठाकुरजी ने शास्त्रीय संगीत का भी अध्ययन किया। श्रीठाकुरजी सम्भवतः देश के प्रथम ऐसे व्यास हैं, जो मात्र 48 वर्ष की आयु में श्रीमद्भागवत सप्ताह कथा के 850 विशाल आयोजन कर चुके हैं। आपकी कथा शैली इतनी सरस एवं सरल है कि सभी श्रेणी के श्रोता आनन्दमग्न हो जाते हैं। आपके निर्देशन में वृन्दावन में श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान की स्थापना हुई, जिसके अन्तर्गत श्रीमद्भागवत धाम में श्रीभागवत एवं वेदादि की निःशुल्क शिक्षा व्यवस्था की गयी है। भागवतकृपा निकुंज में एक भव्य सत्संग हाल का निर्माण किया गया है जिसमें श्रीमद्भागवत सप्ताह आदि धार्मिक आयोजन एवं अनुष्ठान सम्पन्न होते हैं। एक आतिथेयम् निर्माणाधीन है जो शीघ्र ही अतिथियों के लिए आवासीय सुविधा हेतु उपलब्ध होगा।

'सर्वभूतहितेरता' की भावना से ओत प्रोत श्रीठाकुरजी अति विनम्र एवं मृदुभाषी हैं। आपका व्यक्तित्व भगवत्–भक्तों को अपनी ओर सहज ही आकर्षित करता है। आपकी वाणी में दिव्य ओज है और मिठास ऐसी कि श्रीमद्भागवत कथा के श्रोता आत्मविभोर होकर अपना सर्वस्व अपने प्यारे श्रीकृष्ण को समर्पित करने को तत्पर हो उठते हैं।

श्रीठाकुरजी की शास्त्र सम्मत मान्यता है कि श्रीमद्भागवत श्रीकृष्ण स्वरूप ही है। विद्वत्–समाज द्वारा 'भागवत भास्कर' उपाधि से सम्मानित श्रीठाकुरजी हिन्दू संस्कृति एवं वैदिक सनातन धर्म के व्यापक प्रचार हेतु मनीला, शिकागो, कनाडा, यूरोप, हांगकांग, अमेरिका तथा लंदन में श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ प्रसाद बाँट चुके हैं।

भागवत धर्म

● श्रद्धेय श्रीकृष्णचन्द्र शास्त्री (ठाकुरजी)

ये वै भगवता प्रोक्ता उपाया ह्यात्मलब्धये।
अञ्जः पुंसामविदुषां विद्धि भागवतान् हि तान्।।
(भा. स्क. 11, अ. 2, श्लोक 34)

परमात्मा की कृपा का प्रत्यक्ष फल यही है कि हमें मानव शरीर प्राप्त हुआ है। अतः जीवन के मूल्यवान् क्षणों में प्रति क्षण कर्म करते हुए प्रति पल भगवत स्मरण चिन्तन बनाए रखें। श्रीमद्भागवत एकादश स्कन्ध द्वितीय अध्याय में श्रीनवयोगेश्वरों ने भागवत धर्म की व्याख्या करते हुए कहा है कि–भगवान् ने भोले–भाले अज्ञानी पुरुषों को भी सुगमता से साक्षात् अपनी प्राप्ति के लिए जो उपाय स्वयं श्रीमुख से बतलाए हैं उन्हें ही–भागवत धर्म कहते हैं ''भागवत धर्म का अवलम्ब लेने से मनुष्य कभी विघ्नों से पीड़ित नहीं होता। अतः परमात्मा की प्रत्यक्ष अनुभूति जीवन में बनी रहनी चाहिए।

भगवान् का जो है वही भागवत है **''भगवतः इदं भागवतम्''** परमात्मा का प्रेमी भागवत है। भगवान् का निवास भी भागवत है और भगवान् का उपदेश भी भागवत है। अतः भगवान् के जो हैं उनके जीवन की शिक्षा को अपने चरित्र में उतारकर चिन्तात्मक रीति से वैसा ही व्यवहार जीवन में आए तो हम भागवत धर्मानुयायी या भागवत होते हैं। नव योगेश्वरों में श्रीहरि नाम के योगेश्वर जी ने भागवत या भगवत भक्तों की तीन श्रेणी बताई हैं या उनके लक्षण कहे हैं।

1–उत्तम भागवत–

सर्वभूतेषु यः पश्येद् भगवद्भावमात्मनः।
भूतानि भगवत्यात्मन्येष भागवतोत्तमः।।

भा. 11.2.45

आत्मस्वरूप परमात्मा प्रत्येक प्राणी में नियन्ता रूप एवं आत्म रूप से विद्यमान हैं। इस प्रकार भगवत् सत्ता का दर्शन करता हुआ, और समाप्त पदार्थ आत्मस्वरूप भगवान् में आद्येय रूप से एवं अध्यस्त रूप से स्थित है अतः सब भगवत् रूप ही है। ऐसी जिसकी दृष्टि और मान्यता है वह उत्तम भागवत माना जाता है।

2–मध्यम भागवत–

ईश्वरे तदधीनेषु बालिशेषु द्विषत्सु च।
प्रेममैत्रीकृपोपेक्षा यः करोति स मध्यमः।।

भा.11.2.46

अर्थात्–जो ईश्वर से प्रेम–भक्तों से मित्रता–मूर्ख पर कृपा और शत्रु की उपेक्षा करता है वह मध्यम कोटि का भागवत (भगवत् भक्त) है।

3–साधारण भागवत–

अर्चायामेव हरये पूजां यः श्रद्धयेहते।
न तद्भक्तेषु चान्येषु स भक्तः प्राकृतः स्मृतः।।

भा.11.2–47

जो भक्त भगवान् के अर्चा विग्रह की निष्ठा से पूजा तो करता है परन्तु अन्य से विशेष सम्बन्ध नहीं रखता न सेवा करता है वह साधारण श्रेणी का भागवत (भगवत् भक्त है)।

अतः उत्तम श्रेणी का भागवत या भागवत धर्मानुयायी वही है जो स्थावर जंगम समस्त प्राणियों में भगवान् का दर्शन करें। अतः प्राणी मात्र में गोविन्द विद्यमान है ऐसा मानकर सब से प्रेमस्नेह का भाव रखना ही भागवत धर्म है। क्योंकि **ईश्वरः सर्व भूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति (गीता)** सांख्य शास्त्र के उद्गाता–भगवान् कपिल कहते हैं कि–

अहं सर्वेषु भूतेषु भूतात्मावस्थितः सदा।
तमवज्ञाय मां मर्त्यः कुरु तेऽर्चाविडम्बनम्।।

(भा. स्क. 3, अध्या. 29, श्लोक 21)

यो मां सर्वेषु भूतेषु सन्तमात्मानमीश्वरम्।
हित्वार्चां भजते मौढ्याद्भस्मन्येव जुहोति सः।।

(भा. स्क. 3, अ. 29, श्लोक 22)

समस्त प्राणियों में निवास करने वाले मुझ परमात्मा को सभी में जिसने नहीं देखा उसकी मूर्ति पूजा तो मात्र विडम्बना है। और अर्चा विग्रह में हमारी पूजा करे परन्तु प्राणियों से प्रेम न करे उसकी अर्चा (मूर्ति पूजा) तो भस्म में किए गए हवन के समान है। पूजा तो करनी ही चाहिए मन्दिर जाना ही चाहिए परन्तु यह कभी भूलना नहीं चाहिए कि जो भगवान् मूर्ति में विद्यमान हैं वह श्वान्–शूकर आदि में भी तो हैं। श्वान आदि में परमात्म दर्शन का तात्पर्य यह नहीं कि हम उन्हें अलमारी में बिठाकर पूजा करें। उनको सताऐं नहीं नाजायज तकलीफ नहीं दें। सभी में भगवत् दर्शन करना हमारे मन को निर्मल बनाता है, दृष्टि को सात्विक बनाता है। चारित्रिक पवित्रता बढ़ाता है और धीरे–धीरे शुद्ध मन गोविन्द चरणानुरागी होता है और मन प्रभु में लगना ही मानव जीवन की उपादेयता है।

जैसे भागवत या भगवद् भक्तों की तीन श्रेणियाँ बताई उसी प्रकार भगवत धर्म की तीन धाराएँ श्रीमद्भागवत जी में वर्णन की गई हैं।

भागवत धर्मानुसार मन की वृत्तियाँ अन्तर्मुखी होकर गोविन्द में लगे इसकी तीन धाराएँ हैं।

1–प्रभु के प्रति विश्वास का होना –

एक पल के लिए भी गोविन्द हमसे दूर नहीं हैं उनकी नित्य सन्निधि का अनुभव करना और–**रक्षिष्यतीति विश्वासो गोप्तृत्त्व वरणं तथा** प्रति पल मेरे साथ हैं इसलिए प्रतिक्षण हमारी रक्षा करते हैं ऐसा विश्वास मनमें होना ही चाहिए। **हरि व्यापक सर्वत्र सामाना प्रेम से प्रगट होय में जाना।** विश्वास पूर्वक प्रभु के सन्मुख रहें तो माधव का कथन है कि ''सर्व भूतेभ्यो अभयं ददामि एतत् मम वृतम्'' अतः प्रभु भी अपेक्षा रखते हैं– **रक्षापेक्षामपेक्षते**, अतः विश्वास की झलक भक्ति की प्रथम धारा ही तो है।

2–भगवान् से सम्बन्ध जोड़ना–

मैं हूँ श्रीभगवान् का मेरे श्रीभगवान्।
अनुभव यह करते चलो तजि ममता अभिमान।।

जीव का गोविन्द से अनादिकाल से सम्बन्ध है ही परन्तु हम भूल चुके हैं इसीलिए संसार में भटक रहे हैं। अतः उस भाव को दृढ़ता पूर्वक हृदय में स्थापित करना है कि गोविन्द हमारा है। और जो भी सम्बन्ध हमें अच्छा लगे प्रभु से जोड़ें–उन्हें स्वामी भाव से भजें–या गुरुभाव या मित्र भाव या पति भाव। मीरा कहती है–**मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई, जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई।**

सम्बन्ध सच्चे भाव से भी जुड़ना चाहिए। सच्चे भाव से सम्बन्ध जोड़ें तो प्रभु सच्चे मन से निभाते भी हैं। मीरा एवं गोपियों ने पति माना, कर्मा बाई ने पुत्र माना तो नरसी ने स्वामी माना। गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं–**तोहि मोहि नाते अनेक मानिए जो भावे ज्यों त्यों तुलसी कृपाल चरण शरण पावै।** कहते हैं हे राघव मेरे तो आपके प्रति अनेक सम्बन्ध हैं जो तुम्हें सब में ज्यादा प्रिय लगे वही सम्बन्ध आप जोड़ लो। अतः भगवान् से सम्बन्ध जोड़ना भागवत भक्ति की दूसरी धारा है।

3–प्रभु के प्रति समर्पण होना–

अपनी प्रिय से प्रिय वस्तु एवं स्वयं का प्रभु को समर्पण करना। गोविन्द ने श्रीमद्भगवद् गीता में आदेश किया है–

यत् करोषि यदस्नाषि यज्जुहोषि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तद् कुरुष्व मदर्पणम्।।

जीवन में जो कुछ भी करते हैं–चाहे वो पूजा है, पाठ है, यज्ञ है, दान है, या फिर तपस्या है सब गोविन्द की कृपा से हुआ। अतः गोविन्द को समर्पण होना ही चाहिए। श्रीमद्भागवत जी में तो वर्णन है कि यदि साधक शुभ कर्म एवं शुभ कर्मफल गोविन्द को समर्पण करता है तो अशुभ कर्म की प्रवृत्ति ही खत्म हो जाएगी और पूर्वकृत अशुभ का फल भोगना भी न पड़ेगा। आलवन्दार स्तोत्र में स्वामी यामुनाचार्य लिखते हैं कि जो कुछ भी, जिसको मैं अपना मान बैठा हूँ वह वास्तव में आपका ही है फिर ऐसी कौन सी वस्तु या पदार्थ है जिसको मैं अपना कहकर आपको समर्पित करूँ। अतः सर्वस्व समर्पण का भाव मन में उत्तरोत्तर बढ़े ऐसी वृत्ति ही भागवत भगवत् भक्ति की तीसरी धारा है।

उपरोक्त भावना से ओत प्रोत हमारा आहार–विहार–व्यवहार–आचार एवं अंगत बिहार होवे एवं गोविन्द के चिन्तन स्मरण में मन लगा रहे। सर्वान्तर्यामी प्रभु ही सबका नियामक–नियन्ता है और **सर्वभूतहितेरता** का सत्याचरण ही–भागवत धर्म है।

गौ, ब्राह्मण, सन्त-सेवी श्रीदेवकीनन्दन जोशीजी

गोविन्द ने श्रीमद्भगवद्गीता में परम भक्तों के लक्षण बताए हैं कि जो सभी के प्रति सम्मान और सेवा का भाव रखते हुए भी अपने प्रति प्रशंसा की आकांक्षा नहीं रखते एवं सब भगवत् इच्छा से ही उनकी कृपा से होता है ऐसा उत्तम भाव रखनेवाला उत्तम भक्त कहलाता है।

सन्त ब्राह्मणों के प्रति आदर का भाव रखने वाले, धर्म के प्रति पूर्ण आस्था एवं सत्संग में समर्पणात्मक अभिरुचि रखने वाले परम भक्त हैं विप्र कुलभूषण श्रीमान् देवकीनन्दन जोशी जी। धर्म नगरी कटक (उड़ीसा) के व्यवसायी श्रीदेवकीनन्दन जोशी जी करीब 15 वर्षों से सत्संग कथा के माध्यम से हमारे सम्पर्क में आए। श्रीजोशी जी गृहास्थाश्रमी होते हुए भी साधु स्वभाव के हैं।

''सबहि मानप्रद आप अमानी'' की शास्त्रोक्ति को चरितार्थ करने वाले आदर्श दम्पति देवकीनन्दन जोशी जी ने कुछ वर्ष पूर्व हमारे द्वारा भागवत कथा खाटू नरेश श्यामबाबा की सन्निधि में कटक में कराई एवं उसी समय दोनों (दम्पति) का मन हुआ कि चार धाम में भागवत का आयोजन हो। अतः भगवान् बद्रीनाथ की सन्निधि में बद्रिकाश्रम में भागवत कथा का विशाल आयोजन रखा गया जिसमें करीब 1700 श्रोता भक्त भारत के कोने-कोने से कथा श्रवणार्थ पधारे जिनके आवास भोजनादि की व्यवस्था बड़े उदार मन से की। तदुपरान्त द्वारका धाम में भी आयोजन हुआ। फिर भगवान् श्रीरंगनाथ के चरणों में बैठकर भागवत कथा का भक्ति अनुष्ठान अनुष्ठित हुआ और फिर भगवान् जगन्नाथ धाम के पवित्र नीलांचल क्षेत्र में (जगन्नाथपुरी) भागवत के 108 पारायण एवं भागवत कथा की ज्ञान-वैराग्य-भक्ति की त्रिवेणी का ऐसा रस प्रवाहित हुआ कि हजारों की संख्या में पधारे श्रोता भक्तगण उसमें अवगाहन कर आनन्दित हुए। इन समस्त सप्ताह कथा कार्यक्रमों को संस्कार टी. वी. से सीधा प्रसारण एवं विशेष प्रसारण कराकर देशदेशान्तर के दर्शकों को भी कथामृत पान कराया।

कथा की व्यवस्थाएँ एवं श्रोता भक्तों के आवास भोजन की उत्तम व्यवस्थाएँ सभी की सुविधाओं का ध्यान रखने वाले श्रीदेवकीनन्दन जोशी जी एवं उनकी धर्मपत्नी माता जी कभी किसी कार्ड या प्रचार सामग्री में अपना नाम भी नहीं देते। प्रपन्न वैष्णवता से परिपूर्ण ऐसे भक्त गोविन्द को अति प्रिय होते हैं। श्रीजोशी जी के सभी भाई भतीजा, बेटी दामाद एवं समस्त परिवार का भी उनको सहयोग रहता है। यह सब श्रीजोशी जी की भावना का ही प्रभाव है मेरी भगवान् श्रीराधामाधव के चरणों में अनन्त अभ्यर्थना है कि विलक्षण कैंकर्य लक्षणों से समन्वित श्रीदेवकीनन्दन जोशी जी एवं उनकी धर्म परायणा-धर्मपत्नी जी को प्रभु ऐसे ही सत्संग सेवा, समभाव, समरसता के प्रति उनके मनोभावों को उन्नत बनाएँ एवं प्रभु अपनी करुणा कृपादृष्टि बनाए रखें।

शुभकामनाओं सहित

कृष्णचन्द्र शास्त्री (ठाकुरजी)

प्रेम-तत्त्व

● श्रद्धेय पं. श्रीरामानुज शास्त्री जी

द्वै मन को निर्मल बना एक करत है जोय।
जयति सदा मंगल करन प्रेम वरन यह दोय।।

प्रेमतत्त्व स्वरूपतः भगवत् तत्त्व ही है। इसीलिए जितना दुर्लभ भगवान् है, उतना ही दुर्लभ भगवत्प्रेम है। श्रीनारद भक्ति सूत्र में कहा गया है–'प्रकाशते क्वापि पात्रे' श्रीमद्भागवत में श्रीशुकमुनि का वचन है–

राजन् पतिर्गुरुरलं भवतां यदूनां
दैवं प्रियः कुलपतिः क्व च किंकरो वः।
अस्त्वेवमङ्ग भगवान् भजतां मुकुन्दो
मुक्तिं ददाति कर्हिचित्स्म न भक्तियोगम्।।

अर्थात् श्रीशुक जी भगवान् कहते हैं कि हे राजन् ! परीक्षित् जो प्रेमपूर्वक भगवान् का भजन करता है उसको भगवान् मुकुन्द मुक्ति दे देते हैं। परन्तु प्रेम सबको न देकर किसी पात्र को ही देते हैं। इसका कारण यह है कि भगवान् श्रीकृष्ण तुम्हारे पूर्वज पाण्डवों के तथा यदुवंशियों के प्रेम के परवश होकर पालन कर्ता पति, हितोपदेष्टा गुरु, परम आराध्यदेव, प्रिय मित्र तथा पूरे कुल के संरक्षक बनें। और कहाँ तक कहा जाय उन्होंने किङ्कर की तरह उनकी आज्ञा का पालन करते हुए सेवा भी की। इससे यह सिद्ध होता है कि भगवान् श्रीश्यामसुन्दर प्रेम को अपना स्वरूप समझकर सर्वथा प्रेमी भक्त के अधीन हो जाते हैं। इहलौकिक–पारलौकिक भोग वैभव देकर सकाम भक्त की पराधीनता से मुक्त हो जाते हैं। परन्तु प्रेमी भक्त निष्काम भाव से विशुद्ध प्रेम को प्राप्त कर लेता है तो भगवान् उसके पराधीन हो जाते हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि प्रेम तथा भगवान् एक ही तत्त्व हैं और भगवान् तथा भगवत्प्रेम दोनों ही दुर्लभ हैं। उस दुर्लभ प्रेम को प्राप्त करने के लिए उसका पात्र बनना पड़ता है। प्रेम पत्तनं पुस्तक के प्रणेता श्रीरसिकोत्तंस जी महाराज प्रेम का पात्र होने का निर्णय देते हैं निःशिरस्का शब्द से। अर्थात् जिनको शिर नहीं हैं वे ही भगवत्प्रेम के पात्र हैं। यहाँ शिर शब्द का अर्थ अहंकार है जो सर्वथा अहंकार से रहित है वही भगवत्प्रेम का पात्र होता है। इसी आधार पर हिन्दी के कविजन भी कहते हैं। प्रथम शीश अर्पन करे।

प्रथम तो भगवान् के भजन में प्रवृत्ति का होना ही अत्यन्त दुर्लभ है। यदि कथंचित् भजन में प्रवृत्ति भी होती है तो संसार की विविध वासनायें उत्पन्न होकर स्वयं साध्य (फल) बन जाती हैं और भगवान् को साधन बना देती है। भगवान् की उपासना करते हैं तो सांसारिक कामना की सिद्धि के लिए। इसीलिए भगवत्प्रेम प्राप्त नहीं हो पाता संसार के भोग वैभव प्राप्त होते हैं। प्रेममय परमेश्वर का अंश होने के कारण जीव में भी प्रेमांश है। परन्तु संसार की कामनायें उस प्रेम को काम के रूप में परिणत कर देती हैं। अतः विशुद्ध प्रेम का प्रकाश नहीं हो पाता है। प्रेमी में अपने प्रियतम भगवान् से किंचित भी अपने सुख की अभिलाषा तथा अहंकार का सर्वथा अभाव होना ही प्रेमी का लक्षण है। भले ही अपने

प्रियतम भगवान् के द्वारा अपनी ओर से अपार आनन्द दिया जा रहा हो। परन्तु प्रेमी को अपनी ओर से थोड़ी भी आशा नहीं रखनी चाहिए। इसीलिए पूर्वाचार्य प्रेमी का सिद्धान्त निर्णय करते हुए कहते हैं–

आश्लिष्य वा पादरतां पिनष्टु मां
अदर्शनान्मर्महतां करोतु वा।
यथा तथा वा विदधातु लम्पटो
मत्प्राणनाथस्तु स एव नापरः।।

–श्रीहरिभक्तिरसामृतसिन्धुः

भगवान् की उसी प्रेम स्वरूपता को दिखाती हुई श्रुति भगवती कहती हैं–**रसो वै सः, रसं ह्येवायं लब्ध्वानन्दी भवति।** उस आनन्द स्वरूप, रस स्वरूप, प्रेम स्वरूप भगवान् को पा करके ही यह जीव आनन्दित होता है प्रेम का स्वरूप होता है। दो को मिलाकर एक कर देना। यहाँ पर एक का अर्थ अद्वैत नहीं प्रेमाद्वैत है। क्योंकि प्रेमी जीव तथा प्रेमास्पद भगवान् इन दोनों का सेवक सेव्य भाव नित्य बना रहता है। वह प्रेमी नहीं है जो प्रियतम की सेवा से मुक्ति पाना चाहता है। प्रेमी तो वही है जो अपने प्रियतम भगवान् श्यामसुन्दर की निरन्तर सेवा करके ही सुखी रहता है। प्रेम तत्व को ठीक–ठीक पहचानने के लिए प्रेम स्वरूपा प्रेमाचार्यरूपा ब्रज की गोपियाँ तथा उनकी अपने प्रियतम श्रीकृष्ण की सेवा प्रमाण है। जिन गोपियों की सेवा निष्ठा के आगे श्रीकृष्ण अपने को उनका ऋणी मानते हैं।

न पारयेऽहं निरवद्यसंयुजां
स्वसाधुकृत्यं विबुधायुषापि वः।
या माभजन दुर्जरगेहश्रृंखलाः
संवृश्च्य तद् वः प्रतियातु साधुना।।

–श्रीमद्भागवत 10।32।22

भगवान् श्रीश्यामसुन्दर अर्जुन से कहते हैं–

निजांगमपि याः गोप्यो ममेति समुपासते।
ताभ्यः परं न मे पार्थ निगूढ प्रेमभाजनम्।
अतः गोपीजनाधीनो विक्रीडितो यथा पशुः।।

–आदि पुराण

बिभर्ति क्वचिदाज्ञप्तः पीठकोन्मानपादुकम्।

–श्रीमदभागवत 10।11।1

यह तो शृंगार रस प्रधान गोपी जनों की महिमा है। वात्सल्य रस सागर स्वरूपा श्रीयशोदा जी की सेवानिष्ठा देखिए–

एकदा गृहदासीषु यशोदा नन्दगेहिनी।
कर्मान्तर नियुक्तासु निर्ममन्थ स्वयं दधि।।
यानि यानीह गीतानि तद्बालचरितानि च।
दधि निर्मन्थने काले स्मरन्ती तान्यगायते।।

–श्रीमद्भागवत 10।9।11।2

इस प्रकरण में परम वात्सल्यमयी माता यशोदा मनसा स्मरण, वचसा गायन तथा कर्मणा मन्थन तीनों प्रकार से भगवान् बालकृष्ण की सेवा में परायण हैं। इसी प्रेममयी सेवा निष्ठा के कारण इनके द्वारा बन्धन को भी स्वीकार कर लिए हैं।

अब द्वारकापुरी में देखिये तो भगवान् की सोलह हजार एक सौ आठ रानियाँ, सैकड़ों दासियों के होते हुए भी भगवान् श्यामसुन्दर की सारी सेवायें स्वयं सम्पन्न करती हैं–

दासीशता अपि विभोर्विदशुः स्म दास्यम्।

–श्रीमद्भागवत

न वयं साध्वि साम्राज्यं स्वाराज्यं भोज्यमप्युत।
वैराज्यं पारमेष्ठ्यं च आनन्त्यं वा हरेः पदम्।।
कामयामह एतस्य श्रीमतत्पादरजः श्रियः।
कुचकुङ्कुमगन्धाढ्यं मूर्ध्ना वोढुं गदाभृतः।।
व्रजस्त्रियो यद् वांछन्ति पुलिन्द्यस्तृणवीरुधः।
गावश्चारयतो गोपाः पादस्पर्शं महात्मनः।।

यह है उन रानियों की अनन्य निष्ठा। भगवान् श्रीकृष्ण का द्वारकावासी परिकर वर्ग भी प्रेममय ही है। तथापि व्रज की, व्रज गोप गोपीजनों की, व्रज के पशु–पक्षी तृण लता–पताओं तथा व्रजरज की महिमा कुछ और ही है। जो कि मूकास्वादनवत् अनिर्वचनीय है।

प्रेमतत्त्व को भगवत्तत्त्व को तथा प्रेमी जनों के स्वरूप को पहचानने के लिए तथा विशुद्ध प्रेमतत्त्व को प्राप्त करने के लिए भगवान् की शक्ति स्वरूपा, प्रेम स्वरूपा प्रेमाचार्य रूपा गोपीजनों के चरण रज की सेवा का अनुसन्धान ही परम साधन है।

मैं तो समस्त साधनों से विहीन भगवत्प्रेम से सर्वथाशून्य श्रीवृन्दावन धाम में केवल मात्र निवास कर रहा हूँ। अतः भगवान् के प्रिय सखा तथा किंकर श्रीउद्धव जी की तरह गोपीजनों के चरण रज की वन्दना करता हुआ इस लेख का समापन करता हूँ।

वन्दे नन्द व्रजस्त्रीणां पादरेणुमभीक्ष्णशः।
यासां हरि कथोद्गीतं पुनाति भुवन त्रयम्।।

–श्रीमद्भागवत 10।47।63

(• श्रीशाण्डिल्योक्त रास सूत्राणि ग्रन्थ से उद्धृत)

विवाह में अवरोध होने पर सिद्धिप्रद अनुष्ठान

आजकल विवाह की समस्या प्रायः प्रत्येक गृहस्थ के समक्ष उपस्थित होती है। इसके लिए माता–पिता को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। शास्त्रों में वर्णित 'कात्यायनी देवी' का अनुष्ठान बड़ा ही अनुभूत व सिद्धिप्रद है। जन–साधारण की जानकारी व जनहित में इस मन्त्र के अनुष्ठान की विधि दी जा रही है। इसे नियम व श्रद्धापूर्वक करने या कराने से विवाह योग्य बच्चों के विवाह में आने वाले विघ्न दूर होते हैं व विवाह सकुशल सम्पन्न हो जाता है।

जप की विधि–यह जप केले के सूखे पत्ते के आसन पर बैठकर कमल गट्टे की माला से किया जाता है। जप के समय सरसों तेल का दीपक जलते रहना चाहिए। जिस व्यक्ति को यह अनुष्ठान करना हो उसे लाल या पीला वस्त्र पहनकर इक्कीस दिन (जप काल) तक ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। इस मन्त्र का जप जपकर्ता को पान खाते हुए करना चाहिए। अनुष्ठान में कुल 41 हजार जाप होगा। प्रथम दिन 1 हजार तथा शेष 20 दिन प्रतिदिन 2 हजार जाप करना है। जप काल में प्रतिदिन केले के वृक्ष का पूजन करें। भोग एवं प्रसाद के रूप में पीला प्रसाद लगावें।

मन्त्र :

कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरि।
नन्दगोप सुतं देवि पतिं मे कुरु ते नमः।।

भा.10.22–4

अनुष्ठान के अन्त में दशांश हवन, तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण भोजन कराना चाहिए। भोजन में पीला मिष्ठान्न अवश्य परोसें।

नित्य कर्म के कुछ आवश्यक मन्त्र

कराग्रे वसते लक्ष्मी, करमध्ये सरस्वती।
करमूले स्थितो ब्रह्मा, प्रभाते करदर्शनम्।।
प्रातःकाल यह मन्त्र पढ़कर अपने हाथों के दर्शन करना अति शुभ है।

• • •

समुद्र वसने देवी, पर्वत स्तन मण्डले।
विष्णु पत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे।।
इस मन्त्र को पढ़कर सवेरे धरती माता को प्रणाम करना हितकारी है।

• • •

आदिदेव नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्कर।
दिवाकर नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोऽस्तुते।।
इस मन्त्र से भगवान् सूर्य का नमन करने से घर में धन की वृद्धि होती है।

• • •

ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं, ब्रह्म कर्म समाधिना।।
भोजन से पहले इस मन्त्र का पाठ हमारी बुद्धि और तेज को बढ़ाता है।

• • •

दीप ज्योतिः पर ब्रह्म, दीप ज्योतिर्जनार्दनः।
दीपो हरतु मे पापं, दीप ज्योतिर्नमोऽस्तुते।।
दीप जलाकर इस मन्त्र का पाठ हमारे पापों का नाश करता है।

• • •

कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने।
प्रणतक्लेशनाशाय गोविंदाय नमो नमः।।
रात्रि में सोने से पहले इस मन्त्र को पढ़ने से भगवान् श्रीकृष्ण की कृपा से सारे क्लेशों (दुःखों) का नाश होता है।

सर्व बाधा प्रशमनं, त्रैलोक्यस्याऽखिलेश्वरी।
एवमेव त्वया कार्यामस्मद्वैरि विनाशनम्।।
हर प्रकार की बाधा नाश करने में यह मन्त्र बहुत प्रभावी है।

• • •

देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणंगतः।।
सन्तान के इच्छुक दम्पत्ति इस मन्त्र का जप करें तो सन्तान की प्राप्ति होगी।

• • •

सरस्वति महाभागे, वरदे कामरूपिणी।
विश्वरूपि विशालाक्षी, देहि विद्या परमेश्वरी।।
विद्या प्राप्ति के लिए इस मन्त्र का जाप लाभकारी है।

• • •

अच्युतानन्तगोविन्द नामोच्चारण भेषजात्।
नश्यन्ति सकला रोगाः सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।।
इस मन्त्र के जाप से रोगों का नाश हो जाता है।

• • •

या देवी सर्व भूतेषु शान्ति रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।
इस मन्त्र के जाप से घर में सदैव शान्ति रहती है। कलह समाप्त होता है।

• • •

आपदामपहर्तारं, दातारं सर्व सम्पदाम्।
लोकाभिरामं श्रीरामं, भूयो भूयो नमाम्यहम्।।
इस मन्त्र के पाठ से भगवान् श्रीराम आपत्तियों का नाश करते हैं और धन सम्पदा देते हैं।

• • •

धन्या ब्रज वसुन्धरा

● श्रीसौरभ गौड़, अध्यक्ष-विश्व हिन्दू परिषद्, वृन्दावन

(पाठकगण प्रस्तुत लेख–शृंखला में ब्रज चौरासी कोस के दिव्य स्थलों की मनोरम झाँकियों का वर्णन प्राप्त कर पायेंगे। भगवान् श्रीकृष्ण ने ब्रज में जिस–जिस स्थल पर अद्‌भुत लीलाएँ कीं उनका संक्षिप्त किन्तु सारग्राही दिग्दर्शन पाठकों को अवश्य उत्साहित करेगा। इससे ब्रज के प्रति उनकी निष्ठा दृढ़ से दृढ़तर होगी। इस अंक में यह आलेख ब्रज महिमा से प्रारम्भ किया जा रहा है–सम्पादक)

ब्रज माहात्म्य

गुणातीतं परं ब्रह्म व्यापकं व्रज उच्यते।
सदानन्दं परं ज्योति मुक्तानां पदव्ययम्।।

(स्कंद पुराण)

सत्त्व, रज, तम इन तीनों गुणों से अतीत जो परब्रह्म है वह विश्व के कण–कण में व्याप्त है। इसलिए उसे ही व्रज कहते हैं। यह सच्चिदानन्द स्वरूप, परम ज्योतिर्मय और अविनाशी है। जीवन्मुक्त परम रसिक ही इसमें निवास करते हैं। परम ब्रह्म स्वरूप 'ब्रज–वृन्दावन धाम' श्रीकृष्ण की नित्य निवास स्थली है, ऐसे सच्चिदानन्द प्रभु भक्तों के लिए यहाँ सहज ही सुलभ हो जाते हैं। चौरासी कोस की परिधि में फैला सम्पूर्ण ब्रज मण्डल श्रीप्रिया–प्रियतम की नित्य लीला भूमि है। भारत के समस्त तीर्थों के यहाँ विराजमान होने से यह असाधारण भूमि हो गयी है। ब्रज की सुभग रमणीय निकुंजों का परम सौभाग्य अनिर्वचनीय है। प्रत्येक रज–कण किसी नव लीला का परिचायक है। यहाँ के वृक्षवल्लरियाँ, लता–पता आज भी अपने आराध्य की भक्ति में लीन होकर मस्ती में झूम रहे हैं। लीला विहार यहाँ नित्य एवं शाश्वत है। आज भी उसी प्रकार अबाध गति से लीला–विहार, हास– विलास, रस रास ब्रज बीथियों, निकुंज उपवनों में थिरक रहा है, रसिक जन आज भी उन निकुंज लीलाओं का आस्वादन ब्रजभूमि में साक्षात् करते हैं। न तो ब्रज जैसा धाम ही कहीं है और न इस धाम की सी धूम ही अन्यत्र सुलभ है। ब्रजधाम की धूम–धाम में विश्व कोलाहल सुनाई नहीं पड़ता। इस पृथ्वीलोक की रसमय संस्कृति का नाम ही 'ब्रज धाम' है, इसी संस्कृति के रस–रागपूरित दर्पण हैं ब्रज के मन्दिर और श्रीप्रियाप्रियतम के लीला–स्थल। यहाँ पर नित्य उत्सव और पर्व मनाये जाते हैं। इन उत्सवों में भक्ति स्वयं अपने पग में घुँघरु बाँधकर ब्रज प्रांगण में थिरकती रहती है। ब्रज के वायुमण्डल में चहुँओर श्रीराधा–कृष्ण का नाम सुनायी पड़ता है प्रकृति के खुले प्रांगण में पक्षियों का कलरव कीर्तन सा प्रतीत होता है, कल–कल करती कालिन्दी की छटा, पनघट पर हँसती खिलखिलाती ब्रज गोपियाँ, प्रिय चर्चा में सिक्त हास–परिहास करते इठलाते ग्वालबाल, चपल क्रीड़ाओं में उन्मुक्त, बालोचित केलि करता वात्सल्य, अति सुन्दर बड़े सींगों वाली अनन्त गुणों से युक्त गायें यहाँ स्वछन्द विचरण करती हैं यही 'ब्रज–वृन्दावन धाम' भगवान् का परमप्रिय श्रेष्ठतम धाम है। 'ब्रजन्ति गावः यस्मिन्निति ब्रजः' अर्थात् जहाँ गो, गोपाल, गोप और गोपियाँ विचरण करती हैं

उसे 'ब्रज' कहते हैं। विशेष रूप से स्वयं भगवान् ब्रजेन्द्रनन्दन श्रीकृष्ण की विहार भूमि को ही ब्रज कहते हैं। इस ब्रज धाम में अखिल रसामृत मूर्ति ब्रजराज भगवान् श्रीकृष्ण अपनी आह्लादिनी शक्ति ब्रजरानी श्रीराधिका एवं स्वपरिकर के साथ नित्यविहार करते हैं, यहाँ उनकी परम रसमयी रास एवं अन्यान्य क्रीड़ाएँ–नित्य लीला सदैव गतिमान रहती हैं। यह ब्रज भूमि रसपूर्ण संकेतों और सन्देशों की स्थलि है यहाँ श्रीप्रिया–प्रियतम के नित्य–विहार का न आदि है न अन्त, यहाँ केवल प्रेम ही प्रेम विखरा पड़ा है उस प्रेम समुद्र में उन्नत उज्ज्वल प्रणयरस सदा उच्छ्वलित होता रहता है वही ब्रज है इसमें रस ही रस है तथा रसिक एवं भक्त जन इस अलौकिक रस का निरन्तर आस्वादन करते हैं। ब्रह्मसंहिता में ब्रज–वृन्दावन धाम के बारे में कहा है जहाँ परमपुरुष ब्रजेन्द्रनन्दन श्रीकृष्ण ही एकमात्र कान्त हैं, उन्हीं की स्वरूपभूता सर्वलक्ष्मी स्वरूपा ब्रजगोपियाँ कान्ता स्वरूपा हैं, जहाँ की प्रत्येक तरुलता चिन्मय कल्पतरु है, भूमि चिन्तामणि स्वरूप है, जलमात्र ही अमृत है, जहाँ की बोली ही संगीत है, चलना ही नृत्य है, बंशी प्रिय सखी है, प्रकाश चिदानन्दमय है, परम चिद पदार्थमात्र ही आस्वादनीय या भोग्य है, जहाँ अनेकों गऊओं के स्तन से चिन्मय क्षीर का महा समुद्र सर्वदा प्रवाहित होता रहता है तथा भूत–भविष्य रूप खण्ड रहित अखण्ड चिन्मयकाल जहाँ नित्य वर्तमान रहने के कारण निमेष का अर्ध समय भी भूतकाल को प्राप्त नहीं होता उसी श्वेतद्वीप रूपी परम धाम (श्रीब्रज–वृन्दावन धाम) की मैं स्तुति करता हूँ। श्रीकृष्ण के कृपा पात्र ही ब्रजभूमि में निवास कर पाते हैं। श्रीमद्भागवत के अनुसार श्रीब्रज–वृन्दावन धाम ऐसा अलौकिक और अद्भुत धाम है जहाँ ऋतुराज बसन्त की कुछ मधुर–मधुर अनोखी सी छटा सदा सर्वत्र छायी रहती है, धरा पर मखमली हरीतिमा से युक्त गलीचा सा बिछ जाता है। सम्पूर्ण वातावरण में अलौकिक आनन्दमय उन्मादमय यौवन की मादकता और प्रमादकता अभिवर्धित साम्राज्य तन मन को मुग्ध कर देता है। एक ओर जलाशयों में रंग–विरंगे कमल पुष्प विकसित हो रहे हैं तो दूसरी ओर वृक्षों की डालियाँ चम्पा, चमेली, वेली, जूही जैसे सुगन्धित सुप्रफुल्लित सुविकसित पुष्पों से समलंकृत हो रही हैं। ऐसी ब्रजभूमि में ब्रजेन्द्रनन्दन श्रीकृष्ण अपने अनगिनत गोप सखाओं एवं दाऊ भैया के साथ मधुर–मधुर वंशी बजाते हुए असंख्य गौओं के साथ सर्वत्र विचरण एवं श्रीराधिका एवं गोपियों के साथ नित्यरास करते हैं। धन्य है ब्रजभूमि जहाँ श्रीप्रिया–प्रियतम की चरण धूलि आज भी जीव मात्र का कल्याण करती है। यह ब्रजक्षेत्र श्रीयुगल सरकार की लीलाभूमि रसिक भक्तों के लिए आस्था, उपासना, पूजा एवं दर्शन का प्रमुख केन्द्र है। सभी प्राचीन धर्मशास्त्र, समस्त पुराण, श्रीमद्भागवत तथा अन्य भक्ति साहित्य श्रीब्रजभूमि की महिमा से ओत प्रोत है। असंख्य रसिक भक्तजनों ने इस दिव्य लीलाभूमि में श्रीप्रिया– प्रियतम का अलौकिक साक्षात्कार कर अपना मानव जीवन धन्य किया है। इस भूमि का कण–कण परम आराध्य श्रीराधाकृष्ण की पावन लीलाओं का साक्षी है। स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण क्षणभर के लिए भी ब्रज–वृन्दावन का परित्याग नहीं करते चौरासी कोस ब्रजमण्डल में वन, उपवन, प्रतिवन और अधिवन कुल मिलाकर 48 वन हैं। ब्रज मण्डल के समग्र दर्शन का एकमात्र सुलभ साधन है ब्रज परिक्रमा, जिसमें वहाँ के

धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और भाषागत स्वरूप को समीप से देखने का सुअवसर भी प्राप्त होता है साथ ही ब्रज संस्कृति के वास्तविक साक्षात्कार के साथ श्रीप्रिया–प्रियतम की मधुर लीला स्थलियों के नैसर्गिक छटा से ओत–प्रोत वन–उपवन, कुंज–निकुंज, कुण्ड–सरोवर, मन्दिर–देवालयों के दर्शन एवं सन्त–महात्माओं, विद्वान्–आचार्यों की कृपा प्राप्ति का सौभाग्य प्राप्त होता है। सम्पूर्ण ब्रजमण्डल में कदम्ब के बागों में मयूरों का नृत्य कोयल की कूक, पक्षियों का कलरव, श्रीयमुना महारानी की कलकल बहती निर्मल धारा, श्रीब्रजभूमि की माटी की सौंधी सुगन्ध रसिक भक्तजनों को बरबस अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। अखिल ब्रह्माण्ड नायक परम आराध्य भगवान् श्रीकृष्ण एवं उनकी आराध्या एवं आह्लादिनी शक्ति श्रीराधारानी की युगल जोड़ी ने अनेकानेक अद्‌भुत लीलायें कर ब्रजरज के कण–कण को दिव्यता एवं पवित्रता प्रदान की।

ऐसे परम पावन व्रज धाम की चौरासी कोस परिधि में फैले सम्पूर्ण स्थलों का माहात्म्य एवं सूक्ष्म वर्णन आगामी अंकों में प्रकाशित किया जायेगा। ब्रज चौरासी कोस यात्रा कर स्वयं श्रीब्रह्मा जी शाप मुक्त हुए थे। ऐसी मान्यता है कि व्रज चौरासी कोस की एक बार यात्रा करने से मनुष्य को चौरासी लाख योनियों के बन्धन से मुक्त होकर श्रीप्रियाप्रियतम की निकुंज लीला में प्रवेश प्राप्त हो सकता है।

★ ★ ★

तेरा किसने किया शृंगार साँवरे।
तू लगे दुल्हा सा हर बार साँवरे।।
माथे पे मलिहारा चन्दन केसर तिलक लगाया।
मोर मुकुट कानों में कुण्डल इत्र बहुत बरसाया।।
तू महकता रहे हर बार साँवरे।
तेरा किसने किया शृंगार साँवरे।।
बागों से चुन–चुन कर कलियाँ सुन्दर हार बनाया।।
रहे सलामत हाथ सदा वो जिसने तुझे सजाया।
वो सजाता रहे हर बार साँवरे।।
तेरा किसने किया शृंगार साँवरे।
बोल कन्हैया बोल तुझे मैं कौन सा भजन सुनाऊँ।
ऐसा कोई राग बता दे तू नाचे मैं गाऊँ।।
मैं नचाता रहूँ हर बार साँवरे।
तेरा किसने किया शृंगार साँवरे।।

सादर सस्नेह भेंट

● पूज्य श्रीडोंगरे जी महाराज

★ श्रीमद्भागवत पुराण यह नहीं कहता है कि घर त्याग करोगे तभी भगवान् प्राप्त होंगे।

★ वह तो कहता है कि भगवान् को प्राप्त करने के लिए घर छोड़ने की नहीं, अपितु घर के प्रति आसक्ति छोड़ने की आवश्यकता है।

★ घर छोड़ने पर भी यदि आसक्ति बनी रही तो दूसरा घर खड़ा हो जाएगा।

★ भागवत का उपदेश यह है कि घर मत छोड़ो बल्कि घर को ही प्रभु का मन्दिर बनाकर विवेक पूर्वक वहाँ रहो।

★ तुम्हारा घर का मालिक तो भगवान् है और तुम उसके एक अदने–से सेवक ही हो–ऐसी भावना पैदा करो।

★ स्वामित्व में दु:ख है। उसे छोड़ोगे तो सभी दु:ख मिट जाएँगे।

★ लक्ष्मी को छोड़ने की आवश्यकता नहीं, किन्तु उसका स्वयं के लिए उपयोग करने की वृत्ति को छोड़कर सत्कर्म में उसका सदुपयोग करना चाहिए। इसी से भगवान् प्रसन्न होते हैं।

★ आज अपना देश दु:खी है, क्योंकि लोग प्रभु को भूल चुक हैं। देश दु:खी है, क्योंकि लोग प्रभु के उपकार पर कृतज्ञता का अनुभव नहीं करते।

★ देश दु:खी है, क्योंकि लोग पाप से नहीं डरते। जो ईश्वर को भूल जाते हैं, वे कभी सुखी नहीं होते।

★ जो ईश्वर के उपकार को भूल जाते हैं, उनका कभी कल्याण नहीं होता।

★ जिसको पाप से डर लगता है, उसका मन अवश्य शान्त होता है।

★ कुछ लोग मानते हैं कि थोड़ा–सा झूठ बोलने या बुरा काम करने से पाप नहीं लगता है और जो थोड़ा बहुत पाप होता भी है वह मन्दिर में भोजन का थाल चढ़ा देने से समाप्त हो जाएगा, परन्तु यह धारणा गलत है।

★ यदि पाप का प्रायश्चित्त किया जाए और भविष्य में पाप न करने का संकल्प किया जाए तो पाप भस्म होते हैं और सुख शान्ति प्राप्त होती है।

वास्तु शास्त्र का उद्गम

● श्रीविष्णु पाठक, ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्रज्ञ

प्रायः पाँच हजार साल से भी अधिक प्राचीन है यह ''वास्तुशास्त्र''। सर्दी, गरमी, वर्षा, हवा आदि से बचने के लिए मनुष्य ने अपने आपको पंचमहातत्वों का ख्याल रखते हुए अत्यधिक सुखसुविधाओं से युक्त निवास स्थान अपने लिए बनाए। मानव बुद्धि का विकास ज्यों–ज्यों बढ़ता गया,–उसने प्रकृति के मूलतत्वों का, उसके जीवन पर एवं उसके निवास स्थान पर क्या असर पड़ता है वह बड़े चिन्तन मनन के साथ देखने लगे। तदनन्तर तर्क संगत पद्धति से तथा सर्वसाधारण एवं जनसमाज को समझ में आये, इस पद्धति से उसने वास्तुशास्त्र की रचना की।

प्राचीन मुनि ऋषियों के परिश्रम के साथ लिखे गये विश्वकर्मा प्रकाश एवं मयमतम् आदि प्राचीनतम ग्रन्थों को वास्तुशास्त्र का आदि–ग्रन्थ माना जाता है।

प्राचीन मुनि ऋषि खुद मकानों में नहीं रहते थे, परन्तु मनुष्य जाति के हित के लिए अपने जीवन को समर्पित कर वास्तु एवं वास्तुभूमि से सम्बन्धित सर्वप्रकार नियम अनियमों के साथ शुभ–अशुभ का भी विचार कर, उन विचारों की स्थिति तथा खण्डन आदि का निर्देश किया।

अग्नि–पुराण, स्कन्द–पुराण, वायु–पुराण, गरुड़–पुराण, मत्स्य–पुराण इत्यादि ग्रन्थों में वास्तु शास्त्र के बारे में बहुत सी जानकारी हमें मिलती है–जिसे हम अध्ययन कर, परिशीलन कर अपने–अपने काम में ले सकते हैं–तथा सुन्दर मनोरम दोष रहित वास्तु भवन निर्माण कर या करा सकते हैं।

यह प्रत्यक्ष है कि वास्तु–शास्त्र, सूर्य के प्रकाश, किरण और उनके अदृश्य शक्ति के ऊपर पूरी तरह से आधारित है। सूर्य की विविध प्रकार की उपयोगी तथा संहारक शक्तियाँ है। सूर्योदय से सूर्यास्त तक हर दिशाओं की तरफ इनके विविध प्रकार के प्रभाव के कारण विविध परिवर्तन होते हुए नजर आते हैं।

सूर्य की सात किरणों में सात देव शक्ति होती हैं। अनुक्रम से उन सात शक्तियों के नाम हैं–1) पर्जन्य (इन्द्र) 2) कश्यप 3) महेन्द्र (विष्णु) 4) सूर्य 5) सत्य 6) भृश 7) नभस (आकाश) इन किरणों के गुणविशेष का प्राचीन मुनि ऋषियों ने विशेष रूप से अध्ययन किया और उनको कांचन–सम, निर्मल स्फटिक, वैदूर्य, इन्द्रनील, पद्मराग, वज्रक ब्रह्मतेज नाम दिया।

इन सप्त किरणों को सप्तदेवता कहकर दिन का भी सात भागों में विभाजन किया गया है। उन सात भागों का नाम 1) ब्रह्म मुहूर्त, 2) उषा, 3) अरुण, 4) प्रातः, 5) मध्याह्न, 6) अपराह्न, 7) संध्या है।

शेष रात्रि 3 बजे से लेकर 4 बजकर 30 मिनट तक के समय को ब्रह्म मुहूर्त्त कहा जाता है। ब्रह्म मुहूर्त्त का देवता इन्द्र है। इन्द्र देवताओं का राजा है। यह अन्धकार का विनाश करके दुनिया वालों को प्रकाश दिखाता है। इस प्रकाश को सत्य का प्रकाश कहा जाता है। इसी कारण यह समय अर्थात् ब्रह्म मुहूर्त्त को ईश्वर उपासना के लिए सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

शेष रात्रि 4 बजकर 30 मिनट से लेकर 6 बजे तक को उषाकाल कहा जाता है। इस समय सृष्टि के सब प्राणी चैतन्य लेकर निद्रा से जाग उठते हैं। पशु–पक्षी–कीट–पतंग–मनुष्य इत्यादि सभी प्राणी अपने–अपने नित्यकर्म का प्रारम्भ करते हैं। उषा–काल के देवता हैं कश्यप।

सुबह 6 बजे से 9 बजे तक सूर्य की किरणें चारों ओर फैल जाती हैं। मनुष्य तथा अन्यान्य समस्त प्राणि जगत् अपने–अपने जीवन को बड़े उत्साह के साथ शुरु कर देते हैं। इस काल को अरुणकाल कहा जाता है। अरुणकाल के देवता का नाम है महेन्द्र।

दिन के 9 बजे के समय से लेकर 12 बजे के समय तक मनुष्य के काम काज की गति बड़ी तीव्र होती है। इस समय को प्रातःकाल कहा जाता है। प्रातःकाल के देवता का नाम है–'सूर्य'।

दोपहर 12 बजे से लेकर 3 बजे तक के काल को 'मध्याह्न' काल कहा जाता है। मध्याह्न काल के प्रमुख देवता का नाम है–'सत्य'।

3 बजे से 6 बजे तक के काल को अपराह्न काल कहते हैं। अपराह्न काल के प्रमुख देवता का नाम है 'भृश' इसके बाद 6 बजे से 7 बजकर 30 मिनट तक के काल को संध्याकाल कहते हैं। इस समय पशुपक्षी एवं चतुष्पद प्राणी अपने–अपने दिन भर के कार्यकलाप समाप्त कर अपने–अपने निवास स्थान की ओर मुड़ते हैं। सूर्य अस्तमान होकर पश्चिम की ओर ढल जाता है और उनका प्रकाश धीरे–धीरे लुप्त हो जाता है। चारों ओर अन्धकार फैल जाता है। इस संध्याकाल के प्रमुख देवता का नाम है 'नभस'।

वास्तु शास्त्र में वास्तु भूमि के देवता को वास्तुपुरुष नाम से जाना जाता है। यह वास्तुपुरुष देवता हर प्रकार के निवास स्थान–चाहे वह राज महल हो, चाहे विशाल अट्टालिका भवन हो, मध्यम श्रेणी के भवन हो, या छोटी सी झोपड़ी हो, मन्दिर हो या दुकान हो, सब क्षेत्र में विराजमान मान रहते हैं। अतः वास्तु देवता का पूजन समय पर करना चाहिए।

वास्तु देवता और उनके पूजा अर्चना के बारे में मत्स्य पुराण में मनोरंजक कथा बताई गई है। एक कथा इस प्रकार है–

बहुत समय के पूर्व 'अन्धक' नाम के एक असुर से शंकर भगवान् का युद्ध हुआ था। यह युद्ध चला था अनेक वर्षों तक। भगवान् शंकर ने जब उस असुर का संहार किया–तो उनके शरीर से बहने वाले पसीने से एक महातत्व की उत्पत्ति हुई। उस

महातत्व की उत्पत्ति होते ही उसने अन्धक असुर का सारा खून पी लिया परन्तु उसकी भूख नहीं मिटी। इसलिए उसने घोर तपस्या की। अपने तप से उसने शंकर भगवान् को खुश कर वर प्राप्त किया। वर प्राप्ति के पश्चात् उस महातत्व ने भूलोक पहुँच कर, भूलोक के समस्त प्रकार के प्राणियों को बड़ी जल्दी से खाना शुरु कर दिया।

महातत्त्व के उस भयंकर काण्ड को देख कर–देव, दानव, राक्षस, मानव आदि सभी प्राणी बहुत डर गये। सभी ब्रह्मा की शरण में आये। ब्रह्मा ने महातत्व को पेट के बल गिराने का परामर्श दिया। ब्रह्मा जी के परामर्श के अनुसार 81 देवताओं ने मिल कर उसे पेट के बल गिराया और वे उसके शरीर के विभिन्न हिस्सों पर जा बैठे।

तब महातत्व ने ब्रह्मा से प्रार्थना की और ब्रह्मा ने दया से अभिभूत होकर उसे यह वरदान दिया,–जो कोई नये भवन निर्माण के बाद तुम्हारी,–वास्तु देवता जानकर पूजा करेंगे और हविष्यान्न स्वरूप अन्नदान करेंगे, उनको तुम अपार सुख समृद्धियाँ और खुशियाँ प्रदान करना परन्तु जो लोग तुम्हारी पूजा किये बगैर ही उस वास्तु में रहना शुरु करेंगे, उनको तुम अपना भक्ष्य बना लेना। उन्हें तुम तकलीफ भी दे सकते हो।

इस प्रकार की कथा का विवरण अनेकानेक ग्रन्थों में मिलता है। परन्तु इस प्रकार की कथाओं की सत्यता का प्रमाण अर्थात् सत्यता कहीं भी नहीं मिलती। सम्भवतः इस प्रकार की कथाओं का समावेश ग्रन्थों में इसलिए किया गया है कि, जनसमाज को इस विषय के महत्व का ज्ञान हो और वे वास्तुशस्त्र के नियमों का पालन करते हुए भवन निर्माण करें या करायें।

रामायण, महाभारत जैसे महाकाव्यों में भी वास्तुशास्त्र का वर्णन मिलता है। उस समय अयोध्या नगरी की नगर रचना, विविध प्रकार के भवनों का निर्माण, देव मन्दिर आदि का निर्माण, बागबगीचे, जलाशय इत्यादि के निर्माण, सब वास्तु शास्त्र के नियमों के अनुसार ही थे। भारत से श्रीलंका तक जो सेतु श्रीरामचन्द्र जी ने जब बनवाया था, तब उन्होंने विश्वकर्मा पुत्र नल की सहायता तथा मार्गदर्शन को अपनाया था। नल एक महान वास्तुशास्त्री थे।

महाभारत में भी वास्तुशास्त्र के अनेक उदाहरण मिलते हैं। पाण्डवों ने राजसूय यज्ञ के समय जब इन्द्रप्रस्थ नगरी की स्थापना की थी उस समय भगवान् श्रीकृष्ण के कहने के अनुसार वास्तुशिल्पी मय नामक दानव ने वहाँ एक माया नगरी का निर्माण किया और उस माया नगरी के बीचों–बीच एक माया सरोवर भी बनाया था। उसी माया सरोवर में दुर्योधन भ्रम से गिर पड़ा था। यह वृत्तान्त सभी को विदित है। दुर्योधन इसलिए गिर पड़ा था कि वह माया सरोवर था। माया–सरोवर अर्थात् सरोवर न होकर सपाट पृष्ठ भूमि था। निर्माण

कला के कौशल से सपाट पृष्ठभूमि जलाशय मालुम हो रही थी।

श्रीकृष्ण ने मयदानव द्वारा इन्द्रप्रस्थ नगरी और माया–नगरी के बीचों बीच वह माया सरोवर इसलिए बनवाया था, क्योंकि भगवान् श्रीकृष्ण यह जानते थे कि दुर्योधन कौशल से एक समय इन्द्रप्रस्थ पाण्डवों से छीन लेगा और वहाँ राज्य करने लगेगा। किसी भी प्रासाद के दो भागों के बीचों बीच यदि कुँआ या जलाशय अथवा बड़ा सा गड्ढा होता है, तो वहाँ पर रहने वालों का सर्वनाश निश्चित होता है। इसी कारण से कौरव कुल का विनाश हो गया था।

महाभारत की एक घटना इस प्रकार है। भगवान् श्रीकृष्ण थे पूर्ण पुरुषोत्तम, सर्वज्ञ तथा सर्वशक्तिमान उन्होंने विश्वकर्मा से जब द्वारका नगरी की स्थापना करने के लिए कहा था, तो विश्वकर्मा ने वास्तु शास्त्र के नियमों का पालन करते हुए– द्वारका नगरी के समस्त भवन, राजभवन, साधारण भवन, निवास स्थान, बाग बगीचे, देवदेवी का मन्दिर आदि का निर्माण किया था। नगरी की स्थापत्य कला को देख कर समूचे द्वारका वासी आनन्द विभोर होकर सुख और चैन के साथ निवास करने लगे।

भगवान् श्रीकृष्ण के कहने से ही विश्वकर्मा ने द्वारका नगरी के चारों ओर पानी सर्वसमय संचित रह सके एवं वह पानी समय पर काम आ सके–ऐसा बनाया था। विशिष्टकाल में द्वारका नगरी जलमय हो गयी थी।

पश्चिमी सागर में, जहाँ पर द्वारका नगरी बसी थी वहाँ पर नगरी के अवशेष आपको आज भी मिलेंगे।

मोहन–जोदड़ों और हड़प्पा में, जो सिन्धु नदी के आस पास बसा हुआ था, सभ्यताओं में वास्तु शास्त्र का बड़ी मात्रा में प्रयोग किया गया था, यह आज भी दिखाई देता है।

भवन प्राकृतिक संसाधनों के अनुकूल, स्थापत्य एवं वास्तु–सूत्रों से आबद्ध हो ताकि उसमें रहने वाला प्राणी पूर्णरूप से स्वस्थ, सुखी व सम्पन्न हो। यही वास्तु का उद्देश्य है। वाराहमिहिर के अनुसार वास्तु का उद्देश्य इहलोक एवं परलोक दोनों की प्राप्ति है। महर्षिनारद कहते हैं–

अनेन विधना सम्यग्वास्तुपूजां करोति यः।
आरोग्यं पुत्रलाभं च धनं धान्यं लभेन्नरः।।

इस विधि के सम्यक प्रकार से जो वास्तु (भवन विद्या) का सम्मान (पूजा) करता है। वह मनुष्य आरोग्य, पुत्र, धन, धान्यादि का लाभ प्राप्त करता है। सही 'वास्तु' के अभाव में भवन में रहने वाले व्यक्ति की पत्नी की मृत्यु पुत्र–पौत्रादि का नाश, धननाश, मानसिक अशान्ति, रोग, बेचैनी एवं विभिन्न प्रकार के उपद्रवों की प्राप्ति होती है।

★ ★ ★

वास्तु
एक दृष्टि में

साधारणतः वास्तु विज्ञान को किसी पुस्तक या लेख में समा देना लगभग असम्भव है। अपितु इस लेख के माध्यम से ये बताने का प्रयास अवश्य किया गया है कि अपने घर और व्यापारिक स्थल में क्या सावधानी बरत सकते हैं।

घर में :

1) पूर्वोत्तर (N/E) में शौचालय अथवा रसोई न हों।
2) पूर्वोत्तर (N/E) तथा दक्षिण–पश्चिम (S/W) कटा हुआ न हो।
3) प्रमुख द्वार दक्षिण–पश्चिम (S/W) में न हो।
4) प्रधान शयनकक्ष दक्षिण–पूर्व (S/E) तथा पूर्वोत्तर में (N/E) न हो।
5) प्रधान शयनकक्ष दक्षिण–पश्चिम (S/W) में अथवा दक्षिण (S) में हो।
6) रसोई घर अग्नि कोण (S/E) अथवा वायव्य कोण (N/W) में हो।
7) देव स्थान पूर्वोत्तर (N/E) अथवा पूर्व (East) में हो।
8) सीढ़ियाँ घड़ी नुमा (Clock wise) हो।
9) सारे प्रमुख द्वार (Clock wise) खुले।
10) घर का प्रमुख द्वार उत्तर (N) या पूर्व (E) में हो।
11) शौचालय वायव्य कोण (N/W) में या पश्चिम (W) में हो।
12) जल स्थान, बोरिंग पूर्वोत्तर (N/E) में हो।
13) ओवर हेड टंकी दक्षिण–पश्चिम (S/W) में हो।
14) बहुमूल्य वस्तुएँ घर में दक्षिण–पश्चिम (S/W) में अलमारी अथवा तिजोरी में रखें।
15) सोते समय सिरहाना उत्तर (N) में कदापि न हो।

व्यावसायिक स्थल :

1) पूर्वाभिमुख तथा उत्तराभिमुख अर्थात् North Facing & East Facing द्वार ज्यादा उपयोगी है।
2) प्रधान (Head) का बैठने का स्थान दक्षिण पश्चिम (S/W) में होना चाहिए।
3) प्रयास रखें कि सारे कार्यकर्त्ता पूर्व (East) और उत्तर (North) की ओर मुँह करके बैठें।
4) नगदी हमेशा दक्षिण पश्चिम (S/W) में रखें।
5) Beam के नीचे न बैठें तथा यदि Beam हो तो Ceiling करा लें।
6) प्रयास रखें कि दक्षिण पश्चिम (S/W) थोड़ा ऊँचा हो।
7) व्यावसायिक स्थल के आगे कोई बड़ा पेड़ न हो।
8) व्यावसायिक स्थल का पूर्वोत्तर (N/E) तथा दक्षिण–पश्चिम (S/W) कटा हुआ न हो।
9) मुनीम एवं प्रबन्धक इत्यादि पश्चिम में या दक्षिण में बैठें।
10) किसी भी हालत में शौचालय पूर्वोत्तर (N/E) में न हो (यह देव स्थान है)।
11) पीने का पानी पूर्वोत्तर (N/E) में रखें एवं पैन्ट्री (Pantry) अग्नि कोण (S/E) अथवा वायव्य कोण (N/W) में हो।

उपरोक्त बातों में अनेकों अनेक पहलू अभी भी रह गये हैं। जब भी किसी नये घर या व्यावसायिक स्थल का चुनाव करना हो तो उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए भी विशेषज्ञ की सलाह अत्यन्त आवश्यक है।

विशिष्ट शिव पीठ

प्रभु शिव का वास तो सर्वत्र है। अपितु कुछ श्रेष्ठतम शिव स्थानों का वर्णन निम्न है :

द्वादश ज्योतिर्लिंग

नाम	राज्य	नि. रेलवे स्टेशन
1) सोमनाथ	गुजरात	वेरावल
2) मल्लिकार्जुन	आन्ध्र प्रदेश	गुण्टूर/कुरनूल
3) महाकालेश्वर	मध्यप्रदेश	उज्जैन
4) ओंकारेश्वर	मध्यप्रदेश	उज्जैन/खण्डवा
5) केदारेश्वर	उत्तरांचल	ऋषिकेश
6) भीमशंकर	महाराष्ट्र	पूना/अहमदाबाद/ कल्याण
7) विश्वनाथ	उत्तर प्रदेश	वाराणसी
8) त्र्यंबकेश्वर	महाराष्ट्र	नासिक रोड
9) वैद्यनाथ	प्रथम झारखण्ड द्वितीय महाराष्ट्र	जसिडीह परली
10) नागेश्वर	गुजरात	द्वारका
11) रामेश्वर	तमिलनाडु	रामेश्वरम्
12) घृष्णंश्वर	महाराष्ट्र	औरंगाबाद

तत्त्व लिंग

सारे दक्षिण भारत में

नाम	राज्य	नि. रेलवे स्टेशन
1) पृथ्वी लिंग	एकाग्रेश्वर	काँचीपुरम्
2) जल लिंग	जम्बुकेश्वर	त्रिचनापल्ली
3) तेज लिंग	-	विल्लूपुरम्
4) वायु लिंग	काल हस्तीश्वर	तिरूपति/काल हस्ती
5) आकाश लिंग	नटराजेश्वर	चिदम्बरम्

कुछ विशिष्ट अन्य शिव पीठ

नाम	राज्य	नि. रेलवे स्टेशन
1) पशुपतिनाथ	काठमांडू (नेपाल)	-
2) अमरनाथ	जम्मू-काश्मीर	जम्मूतवी
3) कुम्भेश्वर	तमिलनाडु	कुम्भकोणम्
4) सुन्दरेश्वर	तमिलनाडु	मदुरई
5) वृहदेश्वर	तमिलनाडु	तन्जावुर
6) लिंगराज	उड़ीसा	भुवनेश्वर
7) वासुकीनाथ	झारखण्ड	जसीडीह
8) तारकेश्वर	प. बंगाल	हावड़ा/तारकेश्वर
9) शुक्रेश्वर	आसाम	गुवाहाटी
10) गरीबनाथ	बिहार	मुजफ्फरपुर
11) एकलिंगेश्वर	राजस्थान	उदयपुर
12) महाबलेश्वर	महाराष्ट्र	पूना
13) वैद्यनाथ	हिमांचल प्रदेश	कालका
14) गौरी-शंकर	मध्यप्रदेश	जबलपुर

श्रीगणपति स्थल

प्रभु गणपति तो सर्वव्यापी हैं। भारत के समस्त बड़े शिवालयों (ज्योतिर्लिंग, तत्त्वलिंग या अन्य कोई विशिष्ट), विष्णु तीर्थ (द्वारिकानाथ, नाथद्वारा, जगन्नाथपुरी, तिरुपति, वृन्दावन, बद्रिकाश्रम), देवी तीर्थ (समस्त शक्तिपीठ एवं सिद्धपीठ) या अन्य किसी भी बड़े देवालयों में प्रभु गणेश की विशाल प्रतिमाएँ सुशोभित हैं, जिनका दर्शन कर भक्तगण लाभान्वित होते हैं।

समस्त भारत में, विशेष कर महाराष्ट्र में गणेशोपासना अत्यधिक प्रचलित है। गौरी पुत्र गणेश के विख्यात अष्टगणपति क्षेत्र महाराष्ट्र (अधिकांश पूना) में ही हैं। निम्नतालिका में अष्ट विनायकों का श्रीक्षेत्र एवं उनके नामों का वर्णन दिया गया है।

।। श्रीअष्ट विनायक तालिका।।

श्रीक्षेत्र–गणपति का नाम	*श्रीक्षेत्र–गणपति का नाम*
मोरगाँव–श्रीमयूरेश्वर	राजनगाँव–श्रीमहागणपति
थेऊर–श्रीचिन्तामणि	महड़–श्रीवरद् विनायक
लेहाद्रि–श्रीगिरिजात्मज	पाली–श्रीबल्लालेश्वर
ओझर–श्रीविघ्नेश्वर	सिद्धटेक–श्रीसिद्ध विनायक

नोट : कोई भी भक्तगण पूना या अहमद नगर या मुम्बई से उपरोक्त स्थलों का दर्शन दो दिनों में कर सकते हैं। पूना से यात्रा आरंम्भ करनी ज्यादा सुविधापूर्ण है।

यूँ तो गली–गली में प्रभु गणेश के मन्दिर हैं। फिर भी कुछ अन्य विशिष्ट गणपति तीर्थ एवं उनके निकटतम रेलवे स्टेशन निम्न हैं।

गणपति	*रेलव स्टेशन*
श्रीसिद्धि विनायक	मुम्बई
श्रीकन्केश्वर	पूना
श्रीदशभुज चिन्तामणि	पूना
श्रीत्रिशुण्डदेव	पूना
श्रीचित्रकूट गणेश	नान्देड़
श्रीउचिप्पिल्लैयार	तिरुचिरापल्ली
श्रीसिद्धनाथ	बड़ौदा
श्रीसिद्धिदाता	सवाई माधोपुर (रणथम्भौर)
श्रीढुण्ढिराज	वाराणसी
श्रीनवगणपति	बीड़
श्रीस्वयंभू गणपति	नासिक
श्रीशरऊ गणपति	मैंगलोर
श्रीचिन्तामणि गणपति	उज्जैन
श्रीबड़े गणेश	इलाहाबाद

पुराण एवं श्रीमद्भागवत

● डॉ. भागवत कृष्ण नांगिया, वृन्दावन

अपौरुषेय वेदों के समान पुराण को भी अत्यन्त प्रतिष्ठित माना गया है। वेद, उपनिषद् तथा इतिहासादि के साथ–साथ सृष्टि के आदि में पुराण का भी सृजन हुआ है।

अस्य महतो भूतस्य निश्वसितमेतद् यदृग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वांगिरस इतिहासः पुराण विद्या उपनिषदः श्लोकाः सूत्राणामनुव्याख्यानानि व्याख्यानान्यस्यैवैतानि सर्वाणि निश्वसितानि।

(बृहदारण्यकोपनिषद् २/४/१०)

अर्थात् ऋक्, यजुः, सामादि चारों वेद, इतिहास (महाभारत) पुराण (अठारह संख्यक), विद्या, उपनिषद्, श्लोक, सूत्र, अनुव्याख्या तथा व्याख्या इन सबको सृष्टि के साथ–साथ परब्रह्म श्रीभगवान् निःश्वास रूप में बहिर्गत करते हैं। निःश्वास को बाहर करने में जैसे हमें कोई यत्न–चेष्टा नहीं करनी पड़ती, उसी प्रकार समस्त शास्त्रों को सृजन करने में परब्रह्म को भी कोई यत्न नहीं करना पड़ता। वे नित्यसिद्ध एवं महान् हैं, जिन्हें जीवों के निस्तार हेतु श्रीभगवान् करुण–स्वभाववश सृजन करते हैं।

वृहदारण्यकोपनिषद् में कहा गया है इतिहास और पुराण समग्र वेद का ही अंशविशेष हैं इसलिए एक प्रकार से वेद ही हैं। छान्दोग्योपनिषद् में इसी आशय को लेकर इतिहास पुराण को वेद–समूह में पंचम वेद कहा गया है।

(छन्दोग्योपनिषद् ७/१/२)

जिस प्रकार इतिहास शब्द एक वचन में प्रयुक्त होने से एक ग्रन्थ ''इतिहास'' अर्थात् महाभारत ग्रन्थ को सूचित करता है उसी प्रकार "पुराण" शब्द भी एकवचन होने से एक ही ग्रन्थ की ओर इंगित करता है। (मत्स्यपुराण ५३/४)

सम्पूर्ण पुराण अपौरुषेय हैं और एक हैं। यह शतकोटि श्लोक समन्वित हैं किन्तु वेदव्यास जी ने उनमें से लगभग ४ लाख श्लोकों को लेकर १८ भागों में विभक्त किया है। ये १८ पुराण और उनकी श्लोक संख्या इस प्रकार है–

१–	ब्रह्मपुराण	१३०००
२–	पद्म पुराण	५५०००
३–	विष्णु पुराण	२३०००
४–	वायवीय पुराण	२४०००
५–	भागवत पुराण	१८०००
६–	नारदीय पुराण	२५०००
७–	मार्कण्डेय पुराण	९०००
८–	अग्नि पुराण	१६०००
९–	भविष्य पुराण	१४५००
१०–	ब्रह्मवैवर्त पुराण	१८०००
११–	लिंग पुराण	११०००
१२–	वराह पुराण	२४०००
१३–	स्कन्द पुराण	८११००
१४–	वामन पुराण	१००००
१५–	कूर्म पुराण	१८०००
१६–	मत्स्य पुराण	१४०००
१७–	गरुड़ पुराण	१८०००
१८–	ब्रह्माण्ड पुराण	१२२००
	कुल श्लोक	४०३८००

अनादिकाल से अनन्तकाल तक जिस जिस स्थान पर, जिस जिस समय, जो–जो विशेष घटना घटीं, घट रही हैं और घटेंगी–उन सबका उल्लेख उक्त पुराणों में मिलता है। वर्णित विषय के विरुद्ध बातें भी पुराणों में मिलती हैं। क्योंकि किसी वस्तु का परिचय देने के लिए उसकी विरोधी वस्तु का भी परिचय दिया जाता है तभी उसका सम्यक् परिचय एवं महत्त्व ज्ञात होता है। जिस प्रकार श्रीमद्भागवत में जहाँ एक ओर धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष की वासना हीन होना साधुपुरुषों के लिए प्रतिपाद्य है वहीं दूसरी ओर इस चतुवर्ग प्रदाता अनेक साधनों का भी वर्णन इन पुराणों में मिलता है।

ये पुराण ३ प्रकार के हैं– सात्विक, राजसिक और तामसिक। सात्विक पुराण समूह में श्रीहरि की महिमा, राजसिक पुराणों में ब्रह्मा और अग्नि की महिमा एवं तामसिक पुराण समूह में शिव का माहात्म्य समधिक भाव से वर्णित किया गया है। जैसा कि मत्स्य पुराण में कहा गया है–

"सात्विकेषु पुराणेषु माहात्म्यमधिकं हरेः।
राजसेषु च माहात्म्यमधिकं ब्रह्मणो विदुः।।
तद्वदग्नेश्च माहात्म्यं तामसेषु शिवस्य च।"

(मत्स्यपुराण ५३/६७/६८)

वर्गीकरण की दृष्टि से तीनों प्रकार के पुराणों के अन्तर्गत जो–जो पुराण आते हैं उनका स्पष्टीकरण इस प्रकार है–

• **सात्विक पुराण**–विष्णुपुराण, नारदीय पुराण, भागवतपुराण, गरुड़पुराण, पद्मपुराण एवं वराहपुराण।

• **राजसिक पुराण**–ब्रह्माण्ड पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, मार्कण्डेय पुराण, भविष्य पुराण, वामन पुराण एवं ब्रह्म पुराण।

• **तामसिक पुराण**–मत्स्य पुराण, कूर्म पुराण, लिंग पुराण, शिवपुराण, स्कन्द पुराण एवं अग्नि पुराण।

इस प्रकार समस्त पुराणों में साधारणतः उनके लक्षणानुसार विभिन्न उपास्यों के स्वरूप, उनकी प्राप्ति के उपाय तथा साथ ही अनेक वंशों के राजाओं के चरित्रों का भी विषद् वर्णन मिलता है। धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष की प्राप्ति के विविध अनुष्ठानों का भी वर्णन इसमें समाहित है। वैसे तो प्रत्येक पुराण में अपने–अपने इष्ट की भक्ति की महिमा गायी गयी है परन्तु फिर भी समस्त सात्विकपुराणों में श्रीहरि की महिमा तथा भक्ति का विशेष वर्णन किया गया है। परमार्थ ज्ञान के लिए उन सभी की प्रधानता मानी गयी है।

समस्त अष्टादश पुराणों में **श्रीमद्भागवत पुराण का अपूर्व अद्भुत वैशिष्ट्य है** एकमात्र इसी पुराण में पुराण के दसों लक्षण एक साथ विद्यमान हैं अन्य किसी भी पुराण में ये लक्षण एक साथ विद्यमान नहीं। ये दस लक्षण इस प्रकार हैं–

१. गायत्री के आधार पर इसमें विस्तृत रूप से धर्मकथा का वर्णन किया गया है।
२. सारस्वत कल्प में उत्पन्न नरश्रेष्ठों का वर्णन है।
३. गायत्री से आरम्भ होने से भागवत गायत्राख्य ब्रह्मविद्या स्वरूप है।

४. ब्रह्मसूत्र का अर्थ या अकृत्रिम भाष्य है।
५. गायत्री का भाष्य स्वरूप है।
६. महाभारत में इतिहास के अर्थ विशेष रूप से निर्णीत किये गये हैं।
७. वेदों के अर्थों द्वारा परिवर्धित है।
८. साक्षात् भगवान् द्वारा आविर्भूत है।
९. वेदों में सामवेद की भाँति समस्त पुराणों में सर्वश्रेष्ठ है।
१०. यह भविष्यद्–घटनामय ग्रन्थ है।

उपरोक्त लक्षणों की विद्यमानता के कारण ही इसे महापुराण कहा गया है। जिस प्रकार सात्विक, राजसिक, तामसिक पुराणों में मोक्षप्रदाता सात्विक पुराण ही श्रेष्ठ हैं उसी प्रकार सात्विक पुराणों में श्रीमद्भागवत ही श्रेष्ठतम है। श्रीजीव गोस्वामी ने अपने ग्रन्थ तत्त्वसन्दर्भ में लिखा है–

"श्रीमद्भागवतस्य भगवत् प्रियत्वेन–
भागवताभीष्टत्वेन च परम सात्विकम्।"

(तत्त्वसन्दर्भ)

अर्थात् श्रीमद्भागवत भगवान् को प्रिय है एवं भागवत–गणों का या भक्तगण का अभीष्ट होने से परम सात्त्विक है।

श्रीमद्भागवत का श्रेष्ठत्व निरूपण करते हुए गरुड़ पुराण में भी कहा गया है–

पूर्णः सोऽयमतिशयः।
अर्थोऽयं ब्रह्मसूत्राणां भारतार्थ विनिर्णयः।।
गायत्री भाष्य रूपोऽसौ वेदार्थ परिवृंहितः।
पुराणानां सामरूपः साक्षात् भगवतोदितः।।
द्वादशस्कन्धयुक्तो यं शतविच्छेदसंयुतः।
ग्रन्थोऽष्टादशसाहस्रः श्रीमद्भागवताभिधः।।

(गरुड़ पुराण वचन, तत्त्व सन्दर्भ ५५–५६)

"द्वादशस्कन्धयुक्त, शतविच्छेद समन्वित, एवं १८००० श्लोक समन्वित श्रीमद्भागवत अतिशय पूर्णपुराण शिरोमणि है, इसमें ब्रह्मसूत्र एवं महाभारत के अर्थ विशेष रूप से निर्णय किये गये हैं। इसे गायत्री का भाष्य कहा जाता है। समस्त वेदों का निगूढ़–तात्पर्य–अर्थ श्रीमद्भागवत में सन्निविष्ट है।

सामवेद जैसे वेदों में श्रेष्ठ है, उसी प्रकार श्रीमद्भागवत समस्त पुराणों में प्रधान व श्रेष्ठ है। साक्षात् श्रीभगवान् के द्वारा कथित होने के कारण ही इस पुराण का नाम "भागवत" कहा जाता है।"

सम्पूर्ण श्रीमद्भागवत में भगवद्भक्ति का वर्णन विद्यमान है। इसके प्रतिपाद्य विषय परब्रह्म स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण हैं। नायक रूप से उनकी दास्य, सख्य, वात्सल्य तथा मधुर भावात्मिका भक्ति का सर्वोत्कृष्ट निरूपण किया गया है।

श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे ! हे नाथ नारायण वासुदेव।।

।। कालसर्पयोग।।

जन्म पत्री में जब सारे के सारे ग्रह राहु एवं केतु के बीच में आ जाते हैं, उस योग को काल–सर्प योग कहते हैं। अधिकतर काल–सर्प योग आदमी के जीवन में उलझनें एवं कठिनाइयाँ उत्पन्न करते हैं। काल–सर्प योग राहु, केतु, शनि एवं मंगल की दशाओं में ज्यादा समस्याएँ पैदा करते हैं। इस योग की शान्ति विशिष्टतः

1) त्र्यंबकेश्वर (नासिक),

2) कालहस्तीश्वर (तिरुपति के पास),

3) त्रियुगी नारायण (केदारेश्वर के पास) में होती है।

इसके अलावा जातक निम्न उपाय करके भी इस योग के प्रभाव को आंशिक रूप से हल कर सकते हैं–

क) काल सर्प योग पेन्डल धारण करके,

ख) बहते जल स्त्रोत में सोमवती अमावस्या को स्वर्ण के सर्प (जोड़ा) प्रवाहित करके,

ग) प्रति शनिवार बहते जल स्त्रोत में कोयला प्रवाहित करके,

घ) सर्पाकार अंगूठी धारण करके,

ङ) अपने सिरहाने पर मोर पंख लगा के,

च) नित्य शिव अर्चना करके,

छ) समय–समय पर महा मृत्युंजय जाप करवाके,

ज) नित्य हनुमत् अर्चना करके।

।। स्फटिक् श्री यन्त्र।।

स्फटिक् शान्ति का प्रतीक है एवं स्फटिक् श्री यन्त्र शान्ति एवं समृद्धि का। अपने घर एवं प्रतिष्ठान में चाँदी की कटोरी में शुक्रवार या किसी श्रेष्ठ मुहूर्त में पीले अथवा लाल रेशमी वस्त्र में उपरोक्त श्री यन्त्र की स्थापना करने से लक्ष्मी की वृद्धि होती है। प्रति शुक्रवार विशिष्ट भोग लगावें एवं नित्य प्रति अगरबत्ती दिखावें। स्फटिक् श्री यन्त्र का कोई भी विलोम असर नहीं है।

।। पारद शिवलिंग।।

पारद शिवलिंग घर एवं प्रतिष्ठान में मंगलमय एवं सुखदायी है। पारद शिवलिंग को सोमवार, प्रदोष या किसी श्रेष्ठ मुहूर्त वाले दिन यथा विधि प्रतिष्ठित कराके घर में देवस्थान में स्थापित करना चाहिए। यदि सम्भव हो तो प्रति प्रदोष, मास शिवरात्रि, श्रावण के सोमवार एवं संक्रान्ति वाले दिन पारद शिवलिंग की विशेष आराधना करें। ऐसा माना जाता है कि पारद शिवलिंग शनि से उत्पन्न दोषों एवं कालसर्प योग के दोष में कमी लाता है। पारद शिवलिंग पूजन का भी कोई विलोम प्रभाव नहीं है।

।। नवरत्न।।

यदि जातक को अपने जन्म की जानकारी न हो अथवा उसके पास पत्रिका विश्लेषण न हो तो उसे चाँदी में नवरत्न धारण करना चाहिए। साधारणतया नवरत्न स्वास्तिक एवं ॐ के आकार में पाये जाते हैं। नवरत्न का धारण जातक को विपरीत दशाओं से बचाता है एवं उसके कष्ट को दूर करता है। नवरत्न धारण करने से भी कोई विलोम असर नहीं होता है।

राशि–रत्न

जन्मदिन के अनुसार 12 राशियाँ होती हैं। हर मनुष्य किसी एक राशि के अन्तर्गत आता है। हर राशि दूसरी राशि से अलग होती है और उसी प्रकार हर राशि में ज़न्मे व्यक्तियों का स्वभाव भी अलग होता है। हर राशि का एक स्वामी ग्रह होता है जिसका प्रभाव व्यक्ति के जीवन में पड़ता है। जन्मदिन के अनुसार कायम राशि के रत्न को धारण करने से मनुष्य की इच्छा शक्ति एवं आत्म विश्वास में विकास होता है, व्यक्ति को अपने व्यवसाय, नौकरी, शिक्षा एवं जीवन साथी से प्रचुर लाभ मिलता है। प्रस्तुत तालिका सारे विवरण को समझा रही है–

जन्म–दिन	राशि	रत्न	धातु	अंगुली	वार
21 मार्च से 19 अप्रेल	मेष	मूंगा	सोना/ताँबा	अनामिका	मंगल
20 अप्रेल से 20 मई	वृष	ओपल	चाँदी	तर्जनी	शुक्र
21 मई से 21 जून	मिथुन	पन्ना	चाँदी	अनामिका	बुध
22 जून से 22 जुलाई	कर्क	मोती	चाँदी	कनिष्ठा	सोम
23 जुलाई से 22 अगस्त	सिंह	माणिक	सोना	अनामिका	रवि
23 अगस्त से 22 सित.	कन्या	पन्ना	चाँदी	कनिष्ठा	बुध
23 सित. से 23 अक्टू.	तुला	ओपल	चाँदी	तर्जनी	शुक्र
24 अक्टू. से 21 नव.	वृश्चिक	मूंगा	सोना/ताँबा	अनामिका	मंगल
22 नव. से 21 दिस.	धनु	टोपाज	सोना	तर्जनी	गुरु
22 दिस. से 19 जन.	मकर	जामुनिया	सोना	मध्यमा	शनि
20 जन. से, 19 फर.	कुम्भ	जामुनिया	सोना	मध्यमा	शनि
20 फर. से 20 मार्च	मीन	टोपाज	सोना	तर्जनी	गुरु

नोट : यदि अंगूठी में राशि रत्न धारण करने में असुविधा हो तो गले में पेंडल बनवाकर धारण कर सकते हैं। यह ध्यान रखें कि धातु सम्बन्धित रत्न से ही जुड़ी हो या फिर किसी भी रत्न को पंचधातु में धारण किया जा सकता है। राशि–रत्न धारण करने के पूर्व स्नान करके राशि–रत्न (अंगूठी/पेंडल) को शुद्ध जल से धोकर एवं इष्टदेव का स्मरण करके धारण करें। रत्न का वजन व्यक्ति की उम्र के हिसाब से कायम होता है वस्तुतः धारण करने के पूर्व किसी योग्य से सलाह ले लेवें। उपरोक्त राशि निर्धारण पाश्चात्य पद्धति पर आधारित है। जिन्हें अपना जन्मदिन न मालूम हो वे टोपाज पहन सकते हैं।

रुद्राक्ष महिमा

● श्रीमती बृजबाला गौड़, वृन्दावन

रुद्राक्ष अमृत तुल्य है। अच्छे कर्म से अच्छे फल की प्राप्ति होती है। यह भगवान् शिव के नेत्रों से गिरे आँसुओं की बूँदों से उत्पन्न हुआ है। ऐसी मान्यता है कि रुद्राक्ष को धारण करने वाला साक्षात् रुद्र (शिव) को ही धारण करता है। इसका माहात्म्य अति अद्‌भुत व आश्चर्यजनक है।

मान्यता ऐसी है कि घर में रुद्राक्ष की पूजा अर्चना करने से लक्ष्मी का हमेशा वास रहता है तथा अन्न, वस्त्र व अन्य किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती है। जो व्यक्ति रुद्राक्ष को धारण करते हैं उनको भूत-प्रेत आदि व्याधियाँ कभी भी परेशान नहीं करती। अकाल मृत्यु (Accidental Death) को टालने की अभूतपूर्व क्षमता इसमें है। रुद्राक्ष की पूजा अर्चना करने वाले निश्चय ही अन्त समय में स्वर्ग जाते हैं।

रुद्राक्ष पर पड़ी धारियों के आधार पर ही इनके मुखों की गणना की जाती है। रुद्राक्ष एक मुखी से लेकर इक्कीस मुखी तक होते हैं। चौदह मुखी से अधिक रुद्राक्ष बहुत कम पाये जाते हैं। प्राय: दुर्लभ वस्तु हैं। प्रत्येक रुद्राक्ष मुखदार की अपनी अलग-अलग उपयोगिता तथा महत्व है। हमारे पुराने ग्रन्थ श्रीमद् देवी भागवत के आधार पर प्रत्येक मुखदार की उपयोगिता व महत्व का वर्णन निम्नानुसार है-

एक मुखी : एक मुखी रुद्राक्ष भगवान् शंकर का स्वरूप है। जो कि सर्व श्रेष्ठ व अति दुर्लभ है। इससे भक्ति व मुक्ति दोनों की प्राप्ति होती है। जिन्होंने इसे पा लिया उनके बड़े भाग्य हैं। जहाँ यह होगा वहाँ अलौकिक तथा आध्यात्मिक सुखों का वास होगा। इसको धारण करने से समस्त कष्टों व दु:खों का स्वत: ही नाश हो जाता है। एक मुखी के विषय में कहा गया है कि इसके दर्शन मात्र से ही मानव का कल्याण हो जाता है, तो पूजन से या धारण करने से क्या नहीं हो सकता होगा ? एक मुखी रुद्राक्ष सर्वोत्तम, सर्वमनोकामना-सिद्धि, फलदायक और मोक्षदायक है। जिसके गले में या पूजाघर में एक मुखी रुद्राक्ष है उस व्यक्ति के शत्रु खुद ही परास्त हो जाते हैं। यह मानसिक शान्ति देकर मानव के समस्त पाप व संकट हर लेता है।

दो मुखी : दो मुखी रुद्राक्ष अर्द्ध-नारीश्वर का स्वरूप है। इसे धारण करने से दम्पत्ति धन, धान्य व सम्पत्ति से युक्त होकर शान्त व पवित्र गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हैं। वैवाहिक क्लेश व मनमुटाव आदि के निवारण हेतु धारण किया जाता है तथा घर से क्लेश को जड़ से दूर करता है। यह पति-पत्नी, पिता-पुत्र, भाई-बहन, गुरु-शिष्य, दोस्तों इत्यादि के मतभेदों को दूर कर उनमें एकता व परस्पर प्रेम की भावना को बढ़ाता है।

तीन मुखी : तीन मुखी रुद्राक्ष साक्षात् अग्नि का विग्रह है। इसे धारण करने वाला अग्नि के समान तेजस्वी हो जाता है। शान्ति व खुशहाली दिलाने वाला रुद्राक्ष है। बेरोजगार व्यक्ति को नौकरी प्राप्ति करने में सहायता प्रदान करता है, दुर्भाग्य का नाश करता है। इसे धारण करने से व्यक्ति की विध्वंसात्मक प्रवृत्तियों का अन्त होता है तथा रचनात्मक प्रवृत्ति का उदय होता है इसलिए यह अध्ययन कार्य में सहायक है।

जो विद्यार्थी पढ़ने में कमजोर हो वह इसे धारण करके अद्‌भुत लाभ उठा सकते हैं। निराशा, दुर्बलता, आत्मविश्वास की कमी आदि में धारण करने से बहुत लाभ पहुँचता है।

चार मुखी : चार मुखी रुद्राक्ष ब्रह्म का स्वरूप है। इसे धारण करने से सभी मानसिक रोग ठीक हो जाते हैं। यह बुद्धिदाता है जो बालक बोलने में अटकते हैं उनके लिए उत्तम है। इसको धारण करने से व्यभिचारी व नास्तिक भी आस्तिक हो जाता है। साक्षात्कार में सफलता प्राप्ति में सहायक है यह मनुष्य को उन्नति पथ पर चलने की ताकत देता है।

पाँच मुखी : पाँच मुखी रुद्राक्ष पंचब्रह्म स्वरूप है। इसके पास रहने से कोई दु:ख प्राणी को नहीं सताता व सब प्रकार के पाप मिट जाते हैं। पाँच मुखी की माला पहनने से धारक का हृदय स्वच्छ, मन शान्त व दिमाग शीतल रहता है। रक्त चाप को नियन्त्रित करने में सहायक है। हृदय रोग, कब्ज व रक्तचाप आदि में अवश्य लाभ पहुँचता है।

छ: मुखी : छ: मुखी रुद्राक्ष स्कन्द के समान है। यह विद्या, ज्ञान, बुद्धि का प्रदाता है। तीक्ष्ण बुद्धि व स्मरण शक्ति में वृद्धि कराता है। इसका धारक शिक्षा, काव्य व्याकरण, छंद, ज्योतिष, चारों वेदों, रामायण व महाभारत आदि ग्रन्थों का विद्वान् हो जाता है।

सात मुखी : सात मुखी रुद्राक्ष लक्ष्मी जी का स्वरूप है। धन, सम्पत्ति, कीर्ति प्रदान करने वाला होता है। इसको धारण करने से व्यापार तथा नौकरी में उन्नति होती है। सातमुखी रुद्राक्ष की माला बड़ी मुश्किल से मिलती है। इसको धारण करने से लक्ष्मी जी प्रसन्न होती हैं। अस्थमा में भी लाभ पहुँचता है।

आठ मुखी : आठ मुखी रुद्राक्ष बटुक-भैरव जी का स्वरूप है, विजयश्री प्रदान करने वाला माना गया है। इससे रिद्धि-सिद्धि की प्राप्ति होती है। इसे धारण करने से विरोधियों की समाप्ति होती है अर्थात् उनका मन बदल जाता है। कोर्ट-कचहरी इत्यादि के मामलों में सफलता प्रदान करता है। धारक को दीर्घायु प्रदान करता है। पेट से सम्बन्धित बीमारियों में लाभ पहुँचता है।

नौ मुखी : नौ मुखी रुद्राक्ष धर्मराज का स्वरूप है। इसे धारण करने से सहनशीलता, वीरता, साहस, कर्मठता में वृद्धि होती है। संकल्प में दृढ़ता आती है व किसी भी प्रकार का भय नहीं रहता। नव शक्ति सम्पन्न माना जाता है व धारक को नवरात्रों के व्रत के समान पुण्य देता है। स्त्री रोग, गर्भपात व सन्तान प्राप्ति में बाधा दूर करने में सहायक होता है।

दस मुखी : दस मुखी रुद्राक्ष भगवान् विष्णु का स्वरूप है। इसके धारण करने से नवग्रह शान्त होते हैं। ग्रह बाधा के कारण यदि भाग्य साथ न देता हो तो अवश्य धारण करें। भूत-पिशाच आदि का भय नहीं रहता। नजर, जादू, टोना-टोटका इत्यादि से रक्षा करता है। यह दसों दिशाओं में यश फैलाता है। इससे कीर्ति, विभूति व धन की प्राप्ति होती है। समाज सेवियों तथा कलाकारों के लिए उत्तम माना जाता है। यह घर, दुकान इत्यादि के वास्तु दोष दूर करता है।

ग्यारह मुखी : ग्यारह मुखी रुद्राक्ष में ग्यारह रुद्रों की प्रतिमा होती है। भाग्य वृद्धि, धन वृद्धि व भगवान् शंकर की कृपा पाने के लिए सर्वोत्तम है इसे धारण करने से सदा सुख की प्राप्ति होती है। धारक

निर्भय होकर रहता है। यह बल, बुद्धि तथा शरीर को बलिष्ठ व निरोगी बनाता है। जिनके जीवन में सदा संघर्ष बना रहता हो, अधैर्य के कारण गलत निर्णय ले लेते हो, दिमाग में हमेशा परेशानी बनी रहती हो, जिसके कारण अपने को दु:खी अपमानित महसूस करते हो या जिन्हें अक्सर किन्हीं कारणों से अपमान झेलना पड़ता हो उन्हें ग्यारह मुखी अवश्य ही धारण करना चाहिए यह शरीर दर्द व लीवर आदि में लाभ पहुँचाता है। स्त्रियों के लिए यह रुद्राक्ष सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, पति की दीर्घायु, उसकी सुरक्षा व उन्नति तथा सौभाग्य प्राप्ति में यह रुद्राक्ष बहुत उपयोगी है।

बारह मुखी : बारह मुखी रुद्राक्ष आदित्य का स्वरूप माना गया है। इसे धारण करने से व्यक्ति का जीवन सूर्य के समान चमकने लगता है तथा उसकी ख्याति सूर्य की किरणों की भाँति सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है। इसको धारण करने से हमेशा चेहरे पर खुशी, समाज में मान सम्मान तथा वाणी में चातुर्यता उत्पन्न होती है। यह चिन्ता, भय को समाप्त करने वाला है। इसका धारक शक्तिशाली व प्रसिद्ध होता है। इससे व्यक्ति को शासक का पद प्राप्त होता है अत: यह नेताओं, प्रशासक व व्यवसायी इत्यादि के लिए अत्यन्त लाभकारी है।

तेरह मुखी : तेरह मुखी रुद्राक्ष स्वामी कार्तिकेय के समान है। राज्य में पद प्राप्त व्यक्तियों को सफलता दिलाकर सम्मान में वृद्धि, समाज में मान प्रतिष्ठा बढ़ाता है, पद में उन्नति कराता है। सम्पूर्ण कामनाओं व सिद्धियों को देने वाला है। सांसारिक मनोकामना पूर्ति का एकमात्र साधन है। इसके धारण करने से हर प्रकार के भोगों की प्राप्ति होती है तथा सभी इच्छाएँ पूर्ण होती हैं। यह यश, प्रतिष्ठा में वृद्धि करता है। यह साधक को मनचाहे स्त्री, पुरुष को वशीकरण करने की शक्ति देता है।

चौदह मुखी : चौदह मुखी रुद्राक्ष हनुमान जी का स्वरूप है, दुर्लभ, परम प्रभावशाली व अल्प समय में ही शिवजी का सान्निध्य प्रदान करने वाला है। इसके प्रभाव से धारक सभी प्रकार के संकटों से मुक्त रहता है। हानि, दुर्घटना, रोग व चिन्ता से मुक्त रखकर धारक की सुरक्षा, समृद्धि करना इसका विशेष गुण है। जो रोग ठीक नहीं होते यह उनको भी ठीक कर देता है। अकाल मृत्यु को टालने की अभूतपूर्व क्षमता इसमें है। यह ऊपरी हवा, भूत, प्रेत, बुरी नजर, टोना, टोटका, काला जादू इत्यादि से धारक की सदैव रक्षा करता है। यह धारक को सदैव सभी प्रकार की परिस्थितियों में सही निर्णय लेने के योग्य बनाता है। एक मुखी रुद्राक्ष के बाद इस रुद्राक्ष से लेकर इक्कीस मुखी तक के रुद्राक्षों को उनके कीमती होने के कारण जो लोग उन्हें धारण करने में असमर्थ हैं, उनके लिए चौदह मुखी रुद्राक्ष उत्तम है। व चौदह मुखी से ऊपर के समस्त रुद्राक्ष अति दुर्लभ, परम प्रभावशाली व संग्रहणीय होते हैं तथा ये स्वयं शिव की ही शक्तियाँ माने जाते हैं। ये मनुष्य को अन्तर्मुखी बनाकर उनके जीवन की समस्त उथल-पुथल समाप्त कर नीचे से ऊपर उठने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। इनके धारक सभी प्रकार की शक्तियों जैसे आत्म-शक्ति, संकल्प-शक्ति, ज्ञान-शक्ति, अध्ययन-शक्ति, रोगों से लड़ने की शक्ति इत्यादि से भरपूर होते हैं।

नोट : रुद्राक्ष धारण करने वाले को माँस, मदिरा का त्याग करना चाहिए।

शंख
पवित्रता एवं समृद्धि का प्रतीक

शंख को विजय, सौख्य, समृद्धि, शुभ और यश प्रभाव का प्रतीक माना गया है। सामाजिक जीवन के लगभग सभी अवसरों पर शंख–ध्वनि को मान्यता प्राप्त है। उत्सव, पर्व, पूजा, पाठ, हवन, जयकार, मंगल–ध्वनि, प्रयाण, आगमन, युद्धारम्भ, विजय वरण, विवाह, राज्याभिषेक, देवार्चन–जैसे अवसरों पर शंख की ध्वनि से आसपास का वातावरण गूँज उठता है। इस प्रकार शंख का प्रयोग सदैव शुभ और अनिवार्य माना जाता है। ''शंख–ध्वनि'' को वैज्ञानिक रूप में भी स्वीकार किया गया है।

''हड्डी'' होकर भी शंख पूज्य है। इसकी पवित्रता असंदिग्ध है। देव स्थानों में वह देव–प्रतिमाओं की भाँति श्रद्धा–सम्मान के साथ रखा जाता है। पौराणिक प्रसंगों के आधार पर शंख लक्ष्मी का सहोदर और विष्णु का प्रिय है। जहाँ शंख होगा, वहाँ लक्ष्मी का निवास अवश्य रहेगा। लक्ष्मी जी ने विष्णु भगवान् द्वारा पूछने पर स्वयं ही यह तथ्य उद्‌धाटित किया–

'वसामि पद्मोत्पल शंख मध्ये,
वसामि चन्द्रे च महेश्वरे च।'

अर्थात्–मैं पद्म, उत्पल शंख, चन्द्रमा और शिवजी में निवास करती हूँ।

शंख के प्रकार एवं उसके गुण

(1) वामावर्त्ती शंख–यह शंख आसानी से प्राप्त है एवं विशेष कर ध्वनि–नाद के लिए अपेक्षाकृत ज्यादा उपयोग में आता है। इसका पेट बाँई ओर खुला रहता है। हालाँकि देव अर्चना भी इससे कर सकते हैं।

(2) दक्षिणावर्त्ती शंख – यह शंख अत्यन्त दुर्लभ है। रामेश्वरम् एवं कन्याकुमारी के समीप पाया जा सकता है। साधारणतया इसका मुख बन्द होने के कारण इसको ध्वनि के लिए प्रयुक्त नहीं किया जाता है। अपितु, ये पूजन स्थल में विराजमान किया जाता है। लक्ष्मी एवं पवित्रता का प्रतीक होने के कारण दक्षिणावर्त्ती शंख का निम्न उपयोग है–

क) दक्षिणावर्त्ती–शंख जहाँ भी रहता है, दरिद्रता वहाँ से निश्चित–रूपेण पलायन कर जाती है।

ख) अन्न भण्डार में अन्न, धन–भण्डार में धन, वस्त्र–भण्डार में वस्त्र, अध्ययन–पूजन कक्ष में रखने से ज्ञान, शयन–कक्ष में रखने से शान्ति की वृद्धि अवश्यमेव होती है।

ग) इसमें शुद्ध जल भरकर, व्यक्ति, वस्तु या स्थान पर छिड़कने से दुर्भाग्य, अभिशाप, अभिचार और दुर्ग्रह–प्रभाव समाप्त हो जाते हैं।

घ) ब्रह्म–हत्या, गौ–हत्या, बाल–हत्या जैसे पातकों से मुक्ति पाने के लिए दक्षिणावर्त्ती शंख में जल (या गंगाजल) भरकर सम्बन्धित व्यक्ति पर छिड़कने से वह दोषमुक्त हो जाता है।

ङ) जादू, टोना, नजर, चलाव जैसे अभिचार–कृत्यों का दुष्प्रभाव भी इससे शान्त हो जाता है।

च) निर्धनता–निवारण के लिए यह सर्वश्रेष्ठ वस्तु है।

शिवजी का राधावतार

● साभार : कल्याण-शक्ति अंक

एक बार परमकौतुकी लीलामय भगवान् श्रीशिव जी ने पार्वती जी से कहा–'देवि ! यदि मुझपर तुम प्रसन्न हो तो तुम पृथ्वीतल पर कहीं पुरुषरूप से अवतार लो और मैं स्त्रीरूप धारण करूँगा। यहाँ जैसे मैं तुम्हारा प्रियतम स्वामी और तुम मेरी प्राणप्यारी भार्या हो, उसी प्रकार वहाँ तुम मेरे स्वामी तथा मैं तुम्हारी पत्नी बनूँगा। बस, यही मेरा अभीष्ट है। तुम मेरी सभी इच्छाओं को पूर्ण करती हो इसे भी पूर्ण करो।'

शक्तिमान् की इच्छा पूर्ण करने के लिए शक्तिदेवी ने स्वीकृति दे दी और कहा–'नवीन मेघ के समान कान्तिमयी जो मेरी भद्रकाली नाम की मूर्ति है वही श्रीकृष्णरूप से पृथ्वी पर अवतार लेगी; अब आप भी अपने अंश से स्त्री रूप धारण कीजिए।'

शिवजी परम सन्तुष्ट होकर बोले–'मैं तुम्हारी प्रियकामना से भूतल पर नौ रूपों में प्रकट हो जाऊँगा। हे शिवे ! मैं स्वयं परम प्रेममयी वृषभानुनन्दिनी श्रीराधा के रूप में अवतीर्ण होऊँगा और तुम्हारी प्राणप्रिया होकर तुम्हारे ही साथ विहार करूँगा। इसके अतिरिक्त मेरी आठ मूर्तियाँ आठ रमणियों के रूप में प्रकट होंगी, वे ही मनोहरनयना श्रीरुक्मिणी और सत्यभामा आदि तुम्हारी आठ पटरानियाँ होंगी। इसके अतिरिक्त जो मेरे ये भैरवगण हैं वे भी रमणीरूप धारणकर भूमिपर अवतीर्ण होंगे।'

देवी ने कहा–'आपकी इच्छा सफल हो, मैं आपकी इन सभी मूर्तियों के साथ यथोचित विहार करूँगी। हे प्रभो ! मेरी जया तथा विजया नाम की जो दोनों सखियाँ हैं वे पुरुष रूप में श्रीदामा और सुदामा होंगी। विष्णु भगवान् के साथ मेरा पहले से निश्चय हो चुका है, वे हलायुध रूप में मेरे बड़े भाई होंगे और सदा मेरे प्रिय कार्यों का साधन करेंगे। उन महाबली का नाम राम होगा। इस प्रकार मैं तुम्हारा कार्य सिद्ध कर अपनी महती कीर्ति की स्थापना करके पुनः भूतल से लौट आऊँगी।'

इसी निश्चय के अनुसार पृथ्वी और ब्रह्मा जी की प्रार्थना पर श्रीपार्वती जी श्रीकृष्ण रूप में तथा श्रीशिव जी श्रीराधारूप में प्रकट हुए।

यह एक कल्प में श्रीराधा–कृष्ण के अवतार का बाहरी रहस्य है। भगवान् और भगवती राधा के अवतार की गूढ़ अभिसन्धि को तो दूसरा कौन जान सकता है ?

व्रत-पर्व

॥ श्रीगणेशाय नमः॥

सं0 2065 फाल्गुन शुक्ल पक्ष

सूर्य उत्तरायण • सूर्योदय 06/17 • सूर्यास्त 05/43 • शिशिर ऋतु (ता0 26 फरवरी से 11 मार्च 2009 तक)

तारीख	वार	तिथि	नक्षत्र	व्रत पर्व विवरण
		समय बजे तक	समय बजे तक	
26/02★	गुरुवार	प्रतिपदा	पू.भा.	चन्द्र मीन राशि पर दिन में 03/13 से,
		06.55	(09.26)	पंचक।
27/02	शुक्रवार	द्वितीया	उ.भा.	रेवती के मूल आरंभ रात्रि 09/45 से,
		06.56	(09.45)	पंचक।
28/02	शनिवार	तृतीया	रेवती	मूल चल रहे हैं, भद्रा सायं 06/00 से रात्रि शेष 05/31 तक
		06.28	(09.37)	चन्द्र मेष राशि पर रात्रि 09/37 से, पंचक समाप्त रात्रि 09/37पर।
01/03	रविवार	पंचमी	अश्विनी	मूल समाप्त रात्रि 09/01 पर।
		(04.10)	(09.01)	
02/03	सोमवार	षष्ठी	भरणी	चन्द्र वृष राशि पर रात्रि 01/48 से।
		(02.28)	(08.07)	
03/03	मंगलवार	सप्तमी	कृत्तिका	भद्रा रात्रि 12/27 से, कामदा सप्तमी
		(12.27)	(06.52)	07 व्रत।
04/03	बुधवार	अष्टमी	रोहिणी	भद्रा दिन में 11/20 तक, चन्द्र मिथुन
		(10.14)	05.25 सायं	राशि पर रात्रि 04/37 से, बुधाष्टमी 08 पर्व, **होलाष्टक आरम्भ**।
5/03	गुरुवार	नवमी	मृगशिरा	
		(07.53)	03.49	
06/03	शुक्रवार	दशमी	आर्द्रा	भद्रा रात्रि शेष 04/18 से, **फगु दशमी**
		05.52 सायं	02.07	(उड़ीसा)।
07/03	शनिवार	एकादशी	पुनर्वसु	भद्रा दिन में 03/07 तक, चन्द्र कर्क
		03.07	12.28	राशि पर प्रातः 06/52 से, **आमलकी एकादशी 11 व्रत सबकी,**
ढाल स्थापना दिन में 03/07 के बाद।				**रंग भरी एकादशी काशी विश्वनाथ शृङ्गार दिवस।**
08/03	रविवार	द्वादशी	पुष्य	श्लेषा के मूल आरंभ दिन में 10/55 से,
		12.51	10.55	प्रदोष 12 व्रत, **गोविन्द द्वादशी, नृसिंह द्वादशी।**
09/03	सोमवार	त्रयोदशी	श्लेषा	मूल चल रहे हैं, चन्द्र सिंह राशि पर दिन
		10.48	09.33	में 09/33 से।
10/03	मंगलवार	चतुर्दशी	मघा	मूल समाप्त प्रातः 08/26 पर,
		08.59	08.26	भद्रा दिन में 08/59 से रात्रि 08/16 तक
जेलपोना प्रातः 08.59 तक होलिका दहन-रात्रि 08/16 के बाद				व्रत की पूर्णिमा, होलिका दहन रात्रि 08/16 के बाद।
11/03	बुधवार	पूर्णिमा	पू.फा.	स्नान-दान की पूर्णिमा, चन्द्र कन्या राशि पर दिन में 01/35 से,
		07.31	07.41	सर्वत्र होली, वसन्त उत्सव, श्रीचैतन्य महाप्रभु जयन्ती।

★=शुभ दिन, ( )=रात,-=दिन

।। श्रीगणेशाय नमः।।

सं0 2065 चैत्र कृष्ण पक्ष

सूर्य उत्तरायण • सूर्योदय 06/06 • सूर्यास्त 05/54 • शिशिर ऋतु (ता0 12 मार्च से 26 मार्च 2009 तक)

तारीख	वार	तिथि	नक्षत्र	व्रत पर्व विवरण
		समय बजे तक	समय बजे तक	
12/03	गुरुवार	प्रतिपदा 06.27प्रातः	उ.फा. 07.16	द्वितीया समाप्त रात्रि शेष 05/51 पर।
13/03	शुक्रवार	तृतीया (05.45)	हस्त 07,20	चन्द्र तुला राशि पर रात्रि 07/37 से, भद्रा सायं 05/48 से रात्रि 05/45 तक।
14/03	शनिवार	चतुर्थी 6.00समस्त	चित्रा 07.53	संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी 04 व्रत, चन्द्रोदय रात्रि 09/16 पर।
15/03	रविवार	चतुर्थी 06.09प्रातः	स्वाती 08.57	चन्द्र वृश्चिक राशि पर रात्रि 04/07 से, सौर चैत्र मास आरंभ, श्रीरंग पंचमी, खरमास आरंभ।
16/03	सोमवार	पंचमी 07.05	विशाखा 10.29	–।
17/03	मंगलवार	षष्ठी 08.28	अनुराधा 12.28	ज्येष्ठा के मूल आरम्भ दिन में 12/28 से, भद्रा दिन में 08/28 से रात्रि 09/21 तक, वृद्ध अंगारक पर्व।
18/03	बुधवार	सप्तमी 10.14	ज्येष्ठा 02.48	चन्द्र धनु राशि पर दिन में 02/48 पर, मूल चल रहे हैं।
19/03	गुरुवार	अष्टमी 12.15	मूल 05.21सायं	मूल सायं 05/21 तक, **श्रीशीतलाष्टमी** 08 व्रत।
20/03	शुक्रवार	नवमी 02.21	पू.षा. (07.59)	चन्द्र मकर राशि पर रात्रि 02/37 से, भद्रा रात्रि 03/23 से, आज बास्योड़ा।
आज बास्योड़ा।				
21/03	शनिवार	दशमी 04.24	उ.षा. (10.30)	भद्रा सायं 04/24 तक।
22/03	रविवार	एकादशी 06.13सायं	श्रवण (12.46)	पाप मोचिनी 11 एकादशी व्रत सबका।
23/03	सोमवार	द्वादशी (07.39)	धनिष्ठा (02.39)	चन्द्र कुंभ राशि पर दिन में 01/42 पर, पंचक प्रारंभ दिन में 01/42 पर।
24/03	मंगलवार	त्रयोदशी (08.39)	शतभिषा (04.06)	भद्रा रात्रि 08/39 से, भौम प्रदोष 13 व्रत, महा वारुणी पर्व, पंचक, मास शिव रात्रि व्रत 13 शुक्रास्त पश्चिम में, तारा लगा है प्रातः 07/44 से।
तारा लगा है।				
25/03	बुधवार	चतुर्दशी (09.09)	पू.भा. 05.04)	चन्द्र मीन राशि पर रात्रि 10/49 से, पंचक, भद्रा दिन में 08/54 तक।
26/03	गुरुवार	अमावस्या 09.07	उ.भा. (05.29)	स्नान–दान–श्राद्ध की अमावस्या, पंचक, प्लव नाम संवत्सर का समापन, सम्वत् 2065 का समापन।

*=शुभ दिन, ()=रात,–=दिन

॥ श्रीगणेशाय नमः॥

सं0 2066 चैत्र शुक्ल पक्ष

सूर्य उत्तरायण • सूर्योदय 05/55 • सूर्यास्त 06/05 • बसन्त ऋतु (ता0 27 मार्च से 9 अप्रेल 2009 तक)

तारीख	वार	तिथि	नक्षत्र	व्रत पर्व विवरण
27/03	शुक्रवार	समय बजे तक प्रतिपदा (08.35)	समय बजे तक रेवती (05.26)	**शुभकृत नाम सम्वत्सर का आरंभ, वासंतीय** नवरात्र आरंभ, कलश स्थापन एवं ध्वजा रोपण, शुक्रोदय रात्रि 01/14 पर, मूल चल रहे हैं, पंचक समाप्त रात्रि 05/26 पर, चन्द्र मेष राशि पर रात्रि 05/26 से **गुड़ी–पड़वा**। मूल समाप्त रात्रि 04/56 पर।
तारा उत्तर गया। वर्ष प्रवेश से खरमास चालू है।				
28/03	शनिवार	द्वितीया (07.35)	अश्विनी (04.56)	सौभाग्य सुन्दरी व्रत, **गणगौर**, सिंधारा, भद्रा रात्रि शेष 05/18 से, **मत्स्यावतार**।
29/03	रविवार	तृतीया 06.11 सायं	भरणी (04.07)	भद्रा दिन में 04/25 तक, **वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी** 04 व्रत, चन्द्र वृष राशि पर दिन में 09/49 से। **श्रीराम राज्य महोत्सव**।
30/03	सोमवार	चतुर्थी 04.25	कृत्तिका (02.56)	चन्द्र मिथुन राशि पर दिन में 12/43 से, श्रीस्कन्द षष्ठी व्रत, **श्रीसूर्य षष्ठी व्रत (बिहार)**। भद्रा दिन में 09/46 से रात्रि 08/34 तक, श्रीअन्नपूर्णा परिक्रमा दिन में 09/46 से, अष्टमी की कढ़ाई 09/46 के बाद।
31/03★	मंगलवार	पंचमी 02.22	रोहिणी (01.30)	
01/04	बुधवार	षष्ठी 12.09	मृगशिरा (11.56)	
02/04	गुरुवार	सप्तमी 09.46	आर्द्रा (10.16)	
03/04★	शुक्रवार	अष्टमी 07.20	पुनर्वसु (08.36)	**श्रीदुर्गाष्टमी 08 व्रत**, अष्टमी की कढ़ाई प्रातः 07/20 तक तदुपरांत नवमी की कढ़ाई, अन्नपूर्णा परिक्रमा प्रातः 07/20 तक **श्रीराम नवमी, श्रीरामावतार (दोपहर में) विशेषोत्सव अयोध्या**, चन्द्र कर्क राशि पर दिन में 03/01 से, नवमी समाप्त रात्रि शेष 04/57 पर।
अष्टमी व नवमी की कढ़ाई।				
04/04	शनिवार	दशमी (02.41)	पुष्य (07.02)	श्लेषा के मूल आरंभ रात्रि 07/02 से, नवरात्र व्रत की पारणा।
05/04	रविवार	एकादशी (12.35)	श्लेषा 05.37 सायं	भद्रा दिन में 01/38 से रात्रि 12/35 तक, चन्द्र सिंह राशि पर सायं 05/37 से, **कामदा 11 एकादशी व्रत सबका।** मूल समाप्त दिन में 04/26 पर।
06/04	सोमवार	द्वादशी (10.46)	मघा 04.26	
07/04	मंगलवार	त्रयोदशी (09.16)	पू.फा. 03.37	चन्द्र कन्या राशि पर रात्रि 09/29 से, **भौम प्रदोष 13 व्रत**, श्रीअनंग 13 व्रत, **श्रीमहावीर जयंती (जैन)**। भद्रा रात्रि 08/11 से।
08/04	बुधवार	चतुर्दशी (08.11)	उ.फा. 03.08	
09/04★	गुरुवार	पूर्णिमा (07.34)	हस्त 03.05	स्नान–दान–व्रत की पूर्णिमा, **श्रीहनुमान जयंती (विशेष उत्सव सालासर)**, भद्रा दिन में 07/52 तक, वैशाख स्नान के नियम आरंभ, चन्द्र तुला राशि पर रात्रि 03/18 से।

★=शुभ दिन, ( )=रात,-=दिन

।। श्रीगणेशाय नमः।।

सं0 2066 वैशाख कृष्ण पक्ष

सूर्य उत्तरायण • सूर्योदय 05/45 • सूर्यास्त 06/15 • बसन्त ऋतु (ता0 10 अप्रेल से 25 अप्रेल 2009 तक)

तारीख	वार	तिथि	नक्षत्र	व्रत पर्व विवरण
		समय बजे तक	समय बजे तक	
10/04	शुक्रवार	प्रतिपदा (07.26)	चित्रा 03.31	**कच्छपावतार।**
11/04	शनिवार	द्वितीया (07.51)	स्वाती 04.29	–।
12/04	रविवार	तृतीया (08.46)	विशाखा 05.56 सायं	भद्रा दिन में 08/18 से रात्रि 08/46 तक, चन्द्र वृश्चिक राशि पर दिन में 11/34 से, **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी 04 व्रत**, चन्द्रोदय रात्रि 09/06 पर।
13/04	सोमवार	चतुर्थी (10.07)	अनुराधा (07.51)	ज्येष्ठा के मूल आरंभ रात्रि 07/51 से, **वैशाखी**। खरमास समाप्त।
		खरमास समाप्त		
14/04★	मंगलवार	पंचमी (11.50)	ज्येष्ठा (10.06)	मूल चल रहे हैं, चन्द्र धनु राशि पर रात्रि 10/06 से, सौर वैशाख मास का आरंभ, **बंगला सन् 1416 का आरंभ।**
15/04	बुधवार	षष्ठी (01.50)	मूल (12.38)	भद्रा रात्रि 01/50 से, मूल समाप्त रात्रि 12/38 पर।
16/04	गुरुवार	सप्तमी (03.55)	पू.षा. (03.16)	भद्रा दिन में 02/52 तक।
17/04	शुक्रवार	अष्टमी 60.00समस्त	उ.षा. 60.00समस्त	चन्द्र मकर राशि पर दिन में 09/53 से, **श्रीशीतलाष्टमी 08 व्रत (बूढ़ा बास्योड़ा)।**
18/04	शनिवार	अष्टमी 05.55 प्रातः	उ.षा. 05.49 प्रातः	–।
19/04	रविवार	नवमी 07.40	श्रवण 08.08	पंचक प्रारंभ रात्रि 09/18 से, चन्द्र कुम्भ राशि पर रात्रि 09/18 से, भद्रा रात्रि 08/23 से।
20/04	सोमवार	दशमी 09.04	धनिष्ठा 10.07	भद्रा दिन में 09/04 तक, पंचक।
21/04	मंगलवार	एकादशी 10.02	शतभिषा 11.40	**वरुथिनी 11 एकादशी व्रत सबका,** श्रीवल्लभाचार्य जयंती, पंचक।
22/04	बुधवार	द्वादशी 10.30	पू.भा. 12.43	चन्द्र मीन राशि पर प्रातः 06/27 से, **प्रदोष 12 व्रत**, पंचक।
23/04	गुरुवार	त्रयोदशी 10.26	उ.भा. 01.15	रेवती के मूलारंभ दिन में 01/15 से, भद्रा दिन में 10/26 से रात्रि 10/09 तक, पंचक, **मास शिव रात्रि13 व्रत।**
24/04	शुक्रवार	चतुर्दशी 09.52	रेवती 01.20	पंचक समाप्त दिन में 01/20 पर, चन्द्र मेष राशि पर 01/20 पर, मूल चल रहे हैं, श्राद्ध की अमावस्या।
25/04	शनिवार	अमावस्या 08.49	अश्विनी 12.55	स्नान–दान की अमावस्या, मूल समाप्त दिन में 12/55 पर।

★=शुभ दिन, ( )=रात,–=दिन

।। श्रीगणेशाय नमः।।

सं0 2066 वैशाख शुक्ल पक्ष

सूर्य उत्तरायण • सूर्योदय 05/34 • सूर्यास्त 06/26 • बसन्त ऋतु (ता0 26 अप्रेल से 9 मई 2009 तक)

तारीख	वार	तिथि	नक्षत्र	व्रत पर्व विवरण
		समय बजे तक	समय बजे तक	
26/04	रविवार	प्रतिपदा	भरणी	चन्द्र वृष राशि पर सायं 05/52 से।
		07.23	12.08	
27/04★	सोमवार	द्वितीया	कृत्तिका	श्रीपरशुराम जयंती (प्रदोषकाल), **श्री अक्षय तृतीया,** श्रीबद्रीकेदार
		05.36प्रातः	11.02	यात्रा, तृतीया समाप्त रात्रि 03/35 पर।
28/04	मंगलवार	चतुर्थी	रोहिणी	भद्रा दिन में 02/24 से रात्रि 01/15 तक, चन्द्र मिथुन राशि
		(01.15)	09.39	पर रात्रि 08/53 से, **वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी 04 व्रत।**
29/04★	बुधवार	पंचमी	मृगशिरा	**आदि जगद्गुरु शंकराचार्य जयंती।**
		(10.50)	08.06	
30/04	गुरुवार	षष्ठी	आर्द्रा	चन्द्र कर्क राशि पर रात्रि 11/13 से,
		(08.23)	06.28प्रातः	**श्रीरामानुजाचार्य जयंती,** पुनर्वसु नक्षत्र समाप्त रात्रि 04/48 पर।
01/05	शुक्रवार	सप्तमी	पुष्य	श्लेषा के मूलारंभ रात्रि 03/11 से, भद्रा सायं 05/57 से रात्रि
		05.57	(03.11)	शेष 04/49 तक, **श्रीगंगा सप्तमी,** श्रीगंगोत्पत्ति।
02/05	शनिवार	अष्टमी	श्लेषा	चन्द्र सिंह राशि पर रात्रि 01/44 से,
		03.38	(01.44)	मूल चल रहे हैं।
03/05	रविवार	नवमी	मघा	मूल समाप्त रात्रि 12/30 पर, **श्रीसीता नवमी 09 व्रत**
		01.32	(12.30)	जानकी महोत्सव।
04/05	सोमवार	दशमी	पू.फा.	भद्रा रात्रि 10/56 से, चन्द्र कन्या राशि
		11.41	(11.36)	पर रात्रि शेष 05/28 से।
05/05	मंगलवार	एकादशी	उ.फा.	भद्रा दिन में 10/11 तक, **श्रीमोहिनी 11 एकादशी व्रत सबका।**
		10.11	(11.02)	
06/05	बुधवार	द्वादशी	हस्त	प्रदोष 12 व्रत।
		09.03	(10.53)	
07/05★	गुरुवार	त्रयोदशी	चित्रा	चन्द्र तुलाराशि पर दिन में 11/03 से,
		08.23	(11.13)	श्रीनृसिंह 14 चतुर्दशी व्रत, **नृसिंहावतार,** ओंकारेश्वर यात्रा।
08/05	शुक्रवार	चर्तुदशी	स्वाती	भद्रा दिन में 08/14 से रात्रि 08/25
		08.14	(12.05)	तक, व्रत की पूर्णिमा, **कूर्मावतार।**
09/05★	शनिवार	पूर्णिमा	विशाखा	चन्द्र वृश्चिक राशि पर रात्रि 07/05 से,
		08.35	(01.26)	स्नान–दान की पूर्णिमा, बुद्ध पूर्णिमा, **बुद्ध जयंती।**

★=शुभ दिन, ( )=रात,-=दिन

।। श्रीगणेशाय नमः।।

सं0 2066 ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

सूर्य उत्तरायण • सूर्योदय 05/26 • सूर्यास्त 06/34 • वसन्त ऋतु (ता0 10 मई से 24 मई 2009 तक)

तारीख	वार	तिथि	नक्षत्र	व्रत पर्व विवरण
		समय बजे तक	समय बजे तक	
10/05	रविवार	प्रतिपदा 09.28	अनुराधा (03.15)	ज्येष्ठा के मूलारंभ रात्रि 03/15 से।
11/05	सोमवार	द्वितीया 10.48	ज्येष्ठा 60.00समस्त	भद्रा रात्रि 11/39 से, मूल चल रहे हैं।
12/05	मंगलवार	तृतीया 12.30	ज्येष्ठा 05.27प्रातः	मूल चल रहे हैं, चन्द्र धनु राशि पर प्रातः 05/27 पर, भद्रा दिन में 12/30 तक, **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी 04 व्रत**, चन्द्रोदय रात्रि 09/36 पर।
13/05	बुधवार	चतुर्थी 02.26	मूल 07.54	मूल समाप्त प्रातः 07/54 पर, श्रीश्री माँ आनन्दमयी जयंती।
14/05	गुरुवार	पंचमी 04.30	पू.षा. 10.32	चन्द्र मकर राशि पर सायं 05/11 से।
15/05★	शुक्रवार	षष्ठी 06.28 सायं	उ.षा. 01.07	सौर ज्येष्ठ मास आरंभ, भद्रा सायं 06/28 से।
16/05	शनिवार	सप्तमी (08.13)	श्रवण 03.30	भद्रा प्रातः 07/21 तक, चन्द्र कुंभ राशि पर रात्रि शेष 04/33 से, पंचकारंभ रात्रि शेष 04/33 से।
17/05	रविवार	अष्टमी (09.36)	धनिष्ठा 05.35सायं	**श्रीशीतलाष्टमी 08 व्रत**, पंचक।
18/05	सोमवार	नवमी (10.32)	शतभिषा (07.13)	पंचक।
19/05	मंगलवार	दशमी (10.59)	पू.भा. (08.23)	पंचक, चन्द्र मीन राशि पर दिन में 02/05 से, भद्रा दिन में 10/45 से रात्रि 10/59 तक।
20/05	बुधवार	एकादशी (10.54)	उ.भा. (09.03)	पंचक **अचला 11 एकादशी व्रत सबका,** रेवती के मूल आरंभ रात्रि 09/03 से।
21/05★	गुरुवार	द्वादशी (10.18)	रेवती (09.13)	पंचक समाप्त रात्रि 09/13 पर, चन्द्र मेष राशि पर रात्रि 09/13 से, मूल चल रहे हैं।
22/05★	शुक्रवार	त्रयोदशी (09.16)	अश्विनी (08.55)	मूल चल रहे हैं, भद्रा रात्रि 09/16 से, **वट् सावित्री व्रत का आरंभ प्रदोष 13 व्रत, मास शिवरात्रि 13 व्रत।**
23/05	शनिवार	चतुर्दशी (07.47)	भरणी (08.12)	भद्रा दिन में 08/03 तक, चन्द्र वृष राशि पर रात्रि 01/57 से, **वट् सावित्री व्रत का द्वितीय दिन।**
24/05	रविवार	अमावस्या 06.00 सायं	कृत्तिका (07.10)	स्नान–दान–श्राद्ध की अमावस्या, **वट् सावित्री व्रत का समापन।**

★=शुभ दिन, ( )=रात,-=दिन

श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान वृन्दावन द्वारा संचालित सेवा प्रकल्प

परम पूज्य प्रातः स्मरणीय पं. श्रीकृष्ण चन्द्र शास्त्री द्वारा संरक्षित श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान, पूर्णतया कृष्ण सेवा के लिए समर्पित है। श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान की आधार शाखा श्रीठाकुर जी के निवास स्थान श्रीभागवत कृपा निकुंज, रमणरेती, वृन्दावन में अवस्थित है, जहाँ से विभिन्न प्रकार के सेवा प्रकल्पों का संचालन किया जाता है।

विभिन्न सेवाएँ :

1, श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान, वृन्दावन की अपनी सत्संग–शाला है, जो कि श्रीभागवत कृपा निकुंज के भूतल में अवस्थित हैं, यहाँ श्रीठाकुर जी भागवत प्रचार–प्रसार के लिए समय–समय पर श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ एवं विभिन्न प्रकार के सत्संग ज्ञान यज्ञ का आयोजन करते रहते हैं। (देखें–अंतिम रंगीन पृष्ठ)।

2. परिक्रमा मार्ग, रमणरेती स्थित 'श्रीभागवत धाम' में श्रीठाकुर जी विद्यार्थियों को समय–समय पर भागवत शिक्षा का पाठ पढ़ाते हैं। यह श्रीमद्भागवत विद्यालय है जिसकी पूरी देख रेख श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान करता है (देखें– अंतिम रंगीन पृष्ठ)।

3. ब्रज एवं गिरिराज के सौंदर्यीकरण के लिए श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष अष्टोत्तरसहस्र 1008 श्रीमद्भागवत कथा का विशाल आयोजन होता है। इस वर्ष २६ फरवरी से ये आयोजन श्रीधाम वृन्दावन में हुआ। इस आयोजन से बची राशि से वृक्षारोपण, पेयजल व्यवस्था, मार्ग सौन्दर्यीकरण का कार्य श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान द्वारा प्रतिपादित होता है।

4. श्रीराधा–माधव की कृपा से 'श्री भागवत आतिथेयम्' का निर्माण बड़े जोर पर है। प्रभु कृपा रही तो श्रीठाकुर जी इसका शुभोद्घाटन रथ--यात्रा पर करेंगे। इस तीन मंजिले भागवत आतिथेयम् में वृन्दावन आने वाले भक्तों के ठहरने का उत्तमोत्तम प्रबन्ध होने जा रहा है। रमणरेती मार्ग पर श्रीभागवत कृपा निकुंज के ठीक सामने एवं फोगला आश्रम से ठीक पहले यह निर्माण हो रहा है। (देखें– अंतिम रंगीन पृष्ठ)

5. श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान के तत्वावधान में श्रीठाकुरजी समय–समय पर भारत के विभिन्न वनवासी, पिछड़े या प्राकृतिक आपदाओं से ग्रसित क्षेत्रों के लिए निःशुल्क श्रीमद्भागवत कथा का आयोजन करते हैं, जिससे प्राप्त राशि उन क्षेत्रों की सेवाओं पर समर्पित होती है।

6. श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान समय समय पर सामूहिक यज्ञोपवीत एवं वैवाहिक कार्यक्रमों का आयोजन करता है। जिसका जरूरत मंद भक्त लाभ उठा सकते हैं।

7. वृन्दावन स्थित श्रीभागवत गौशाला में गोपालन बड़े ही श्रद्धाभाव से होता रहता है।

8. अप्रैल 2009 में कलकत्ता प्रवास के समय श्रीठाकुर जी 'श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान' की कोलकाता शाखा का शुभोद्घाटन करेंगे जो कि संस्थान के भारत के पूर्वी क्षेत्रों में आयोजित कार्यक्रमों की देखभाल करेगी।

आप किसी भी रूप से इस संस्थान से जुड़ना चाहते हैं, तो सम्पर्क कर सकते हैं–

पं. लक्ष्मीकान्त शर्मा, वृन्दावन
9837008073

पं. बिष्णु पाठक (सारस्वत), कोलकाता
9331033090

शालीमार बाग, दिल्ली में बीसवें श्रीमद्भागवत कथा आयोजन के अवसर पर कलश यात्रा का दृश्य

परम पावन जगन्नाथ धाम में आयोजित अष्टोत्तरशत श्रीमद्भागवत कथा यज्ञ के दौरान अपार जन समूह

श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान, वृन्दावन द्वारा संचालित सेवा प्रकल्प–

निर्माणाधीन श्रीभागवत आतिथेयम

श्रीमद्भागवत विद्यालय

श्रीभागवत कृपा निकुंज स्थित सत्संग भवन

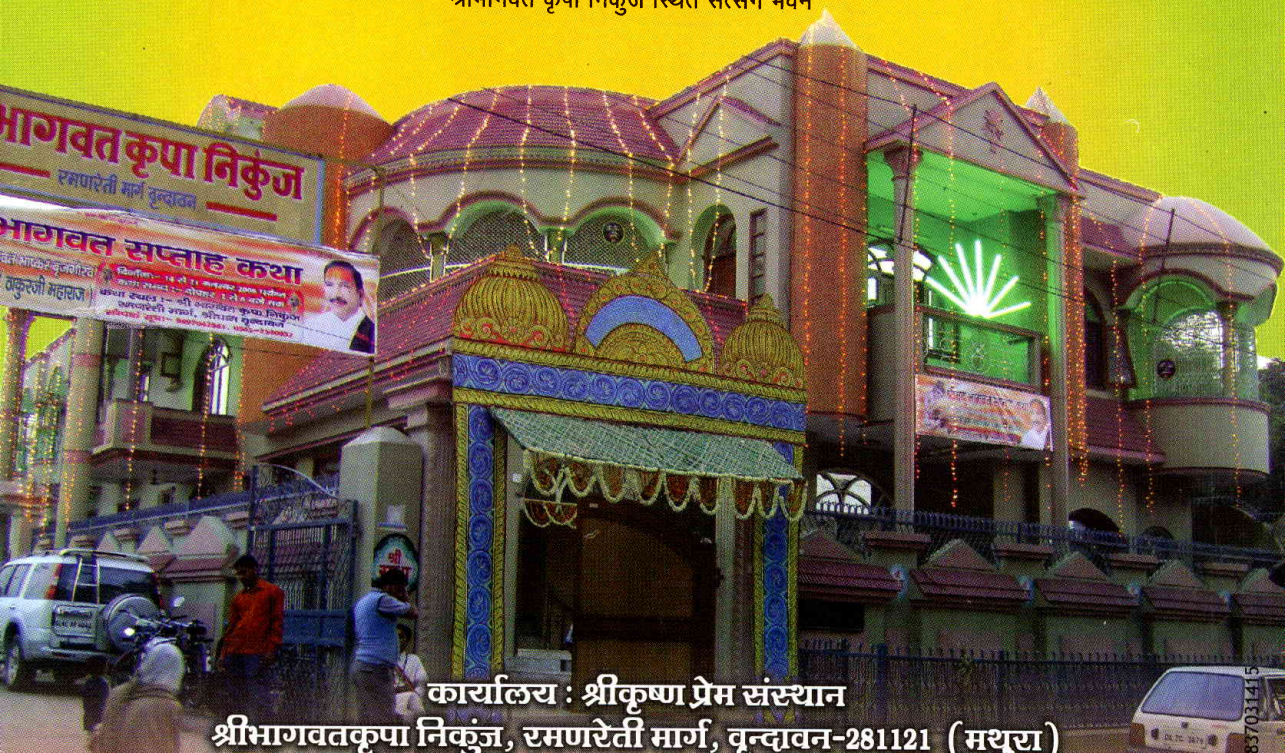

कार्यालय : श्रीकृष्ण प्रेम संस्थान
श्रीभागवतकृपा निकुंज, रमणरेती मार्ग, वृन्दावन-281121 (मथुरा)

सदस्यता शुल्क– वार्षिक : 100 रुपये ● आजीवन : 1500 रुपये ● एक प्रति : 20 रुपये

Harinam 9837031415